THE WAY OF LEGAL MURDER

YUGPRADHAN ACHARYASAM PANYAS SHREE CHANDRASEKHAR VIJAYJI M.S.

समर्पण

उन माताओं को

* जिन्होंने शादी के पहले खुद की गलती की सजा संतान को न देकर उनको जन्म दिया...

* जिन्होंने गरीबी,महंगाई आदि चिंताओं को छोडकर संतान को जन्म दिया ...

* जिन्होंने कैरियर की परवाह किए बिना मातृत्व को जीवित रखकर संतान को जन्म दिया...

* जिन्होंने संसार के सुखों में बच्चों को बाधारूप न मानकर उन्हें जन्म दिया

* जिन्होंने बलात्कार के शिकार बनने के बावजूद समाज की परवाह किए बिना संतान को जन्म दिया...

* जिन्होंने बीमार मंदबुद्धि बच्चा होने की संभावना के बावजूद उनको जन्म दिया...

और उन महात्माओं को

जो पर्यूषण में त्रिशला क्षत्रियानी ने प्रभु वीर को जन्म दिया ये शब्द हर वर्ष बुलंद आवाज में बोल कर लाखों जैनों को संतान के जन्म पर थोड़ी बहुत रुचि जगा कर गर्भपात के महापाप से दूर करने का जाने अनजाने में भी सफल प्रयत्न कर रहे है ...

-मुनि गुणहंस विजय

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लाल बहादुर शास्त्री भवन,
लखनऊ

दिनांक : 02 नवंबर, 2017

सम्माननीय मुनि गुणहंस विजयजी,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भ्रूण हत्या की समस्या को उजागर करने के उद्देश्य से आप द्वारा 'द वे ऑफ लीगल मर्डर' पुस्तक लिखी गई है।

भ्रूण हत्या वर्तमान समय की एक गम्भीर समस्या है। इस व्यापक समस्या को रोकने के लिए सभी स्तरों पर प्रयत्न करने तथा लोगों को जागरूक किए जाने की आवश्यकता है।

यह प्रकाशन भ्रूण हत्या की समस्या को उजागर करने का सराहनीय प्रयास है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक इस समस्या के प्रति समाज को जागरूक करने में सहायक सिद्ध होगी।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका,

(योगी आदित्यनाथ)

मुनि गुणहंस विजयजी,
तपोवन संस्कार पीठ,
ग्राम अमियापुर,
पोस्ट–सुगढ़ वाया चांदखेड़ा,
जनपद गांधीनगर,
गुजरात–382424

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

सत्यमेव जयते

मंत्री
सड़क परिवहन राजमार्ग
एवं पोत परिवहन
भारत सरकार
MINISTER OF ROAD TRANSPORT
HIGHWAYS & SHIPPING
GOVERNMENT OF INDIA

दिनांक : 28 नवंबर, 2017

माननीय श्री गुणहंस विजय जी,

आपके द्वारा प्रेषित पुस्तक "THE WAY OF LEGAL MURDER" प्राप्त हुई।

पुस्तक का संपादन, विषयवस्तु एवं उद्देश्य सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन से समाज में जागरूकता आएगी एवं गर्भपात नाम का यह दूषण जड़ से समाप्त होने की आपकी भावना को सफलता मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित।

आपका,

(नितिन गडकरी)

मुनि गुणहंस विजयजी,
तपोवन संस्कार पीठ, ग्राम–अमियापुर,
पोस्ट–सुगढ़ वाया चांदखेड़ा,
जनपद–गांधीनगर, गुजरात

Transport Bhavan. 1 Sansad Marg, New Delhi-110 001. Tel.: 23711252, 23710121 (O), 23719023 (F)
Email : nitin.gadkari@nic.in

अमित शाह
अध्यक्ष
Amit Shah
President

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

28 नवम्बर, 2017

आदरणीय मुनि गुणहंस विजय जी,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके द्वारा लिखी पुस्तक **गर्भपात** विषय पर आधारित **'THE WAY OF LEGAL MURDER'** पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

आज समाज में अपराध बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। कन्या भ्रूण हत्या एक बड़ी समस्या बनी हुई है। इस अपराध के पीछे इच्छित संतान है। गर्भस्थ शिशु का लिंग परीक्षण कराना और अनचाही संतान से छुटकारा पाना सहज हो गया है। जिस प्रकार से नई तकनीकों का उपयोग हो रहा है उसी का गलत उपयोग कर भ्रूण हत्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, भगत सिंह जी, सुभाष चंद्र बोस जी, वीर सावरकर जी एवं गांधी जी जैसे प्रेरकों के इस देश में हिंसा का नया रूप **भारतीय संस्कृति** का उपहास है। यह सदा रोकना चाहिए।

मैं आपके द्वारा लिखी पुस्तक **गर्भपात** विषय पर आधारित **'THE WAY OF LEGAL MURDER'** पुस्तक के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ। आशा करता हूँ कि यह पुस्तक जनता को गर्भपात जैसे जघन्य अपराध को रोकने व **बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ** का संदेश देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत करेगी।

सधन्यवाद।

भवदीय

(अमित शाह)

प्रति,

मुनि गुणहंस विजय जी
चेन्नई (तमिलनाडु)

11,अशोक रोड, नई दिल्ली - 110001 | दूरभाष : +91 11 23005700 | फैक्स : +91 11 23005787 | ई–मेल : amitshah.bjp@gmail.com
11, Ashok Road, New Delhi - 110001 | Phone: +91 11 23005700 | Fax: +91 11 23005787 | e-mail: amitshah.bjp@gmail.com

વિજય રૂપાણી
મુખ્યમંત્રી, ગુજરાત રાજ્ય

તા. ૦૧-૦૯-૨૦૧૭

આદરણીય મુનીશ્રી ગુણહંસ વિજયજી મહારાજ,

વંદન સહ અભિનંદન.

કચ્છ રાપરના વિધાનસભ્ય માન. શ્રી પંકજભાઇ મહેતાના ઈ-મેઇલ મારફત આપના પુસ્તકની Soft Copy પ્રાપ્ત થઇ છે. આભાર.

સામાજિક ધાર્મિક અને નૈતિક પરંપરાઓ તેમજ માનવ સંસ્કારિતાને ન છાજે એવી હીન પ્રવૃત્તિ એટલે ગર્ભપાત: **"એક ખૂન, કારણો અને સમાધાનો"** વિષયને કેન્દ્રમાં રાખી આપે લખેલુ પુસ્તક, સમગ્ર સમાજ માટે આંખ ઉઘાડનારું છે.

સુજ્ઞ, શિક્ષિત અને સંસ્કારી સમાજ આવા અધમ - માર્ગને અપનાવે એ આશ્ચર્ય અને આઘાતની વાત છે. પુસ્તકમાં આપે કરેલી છણાવટ, સ્થિતી અને પરિસ્થિતિ અંગે આજની પેઢીનો ઇષ્ટ અભિગમ, સુદ્રઢ સમાજનો પાયો બની રહે એવી શુભકામના સાથે આપના આ પુનિત પ્રયાસ માટે અભિનંદન. ધન્યવાદ.

આપનો,

(વિજય રૂપાણી)

To,
Munishri Gunhans Vijayji Maharaj,
C/o. Shree Pankaj A. Mehta,
"Paras" Bungalow,
Beside N. C. C. Office,
Nr. Santoshi Matana Mandir,
Bhuj, Dist. Kutch – 370001.
e-mail: pamehtabjp@gmail.com

THE WAY OF LEGAL MURDER

YUGPRADHAN ACHARYASAM PANYAS SHREE CHANDRASEKHAR VIJAYJI M.S.

*** दिव्याशीष ***

सिद्धांत महोदधि सच्चारित्र चूडामणि

पूज्यपाद आचार्य श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराज के

विनय पूज्यपाद युगप्रधानाचार्यसम

पू.पं.प्रवर श्री चंद्रशेखरविजयजी महाराज

*** लेखक ***

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

*** अनुवादक ***

साध्वीजी भगवंत

*** हिन्दी आवृत्ति ***

10000 नकल

*** प्रकाशन ***

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

102-ए, चंदनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर

पोस्ट ऑफिस के सामने, भठ्ठा, पालडी, अहमदावाद-7.

*** प्राप्ति स्थल ***

नरेश भाई

373, मिंट स्ट्रीट, राजेन्द्र काम्पलेक्स

(महाशक्ति होटल के पास)

चेन्नई-79 फोन: 9841067888

विनित जैन

1, पल्लीयप्पन स्ट्रीट,

(अन्नापिलै स्ट्रीट के पास) चौथा माला

चेन्नई-79 फोन: 9566292931

मनोज जैन

श्री आदिनाथ इंटरप्राईसेस

नं.7, पेरुमाल मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट

चेन्नई-79 फोन : 9840398344

*** मुद्रक ***

DESIGN & PRINTED BY

Firsst Look

IMPRESSION GUARANTEED....

9597511135

नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय

प्रस्तावना

दीक्षा के शुरूआत के सालों में मुंबई के अलग-अलग संघों में हो रहे पू. गुरूदेवश्री के प्रवचनों में बारबार गर्भपात छोड़ने की धारदार प्रेरणाएँ सुनने को मिली। तब ऐसा लगता था कि पू. गुरूदेवश्री ऐसी बाते क्यों कर रहे हैं? एक तो हमारी धर्मसभा में जैन लोग ही आते हैं। और उसमें भी पू. गुरूदेवश्री के प्रवचनों में तो धर्म की रूची वाले ही ज्यादातर आते है और वो लोग तो चींटी जैसे जीवों को भी नहीं मारते। तो अपने पेट में रहे हुए अपने सगे बच्चे को मारने का पाप तो वो नहीं ही करेंगे ना.... तो फिर गुरूदेवश्री क्यों बारबार ऐसी प्रेरणा करते ।

लेकिन ''**मेरी वो सोच एकदम गलत थी**''ऐसा आज मुझे लग रहा हैं। अंतिम 2 सालों में सुरत जैसे धार्मिक शहर से लेकर चेन्नई तक के 1600 कि. मी. के एरिया में रहने का मौका मिला। प्रवचनकार होने की वजह से बहुत सी सत्य घटनाएँ जानने-सुनने को मिली.... और सुनकर आँखे दंग हो गई।

कभी-कभार उन जैन माता-पिताओं पर गुस्सा आया....

कभी-कभार हम साधुओं ने इस बात की देख-रेख क्यो नहीं की.... ? इस सोच से खुद पर गुस्सा आया....

और हर बार''पू. गुरूदेव 100 प्रतिशत सही थे।''ऐसा विचार आया

''लेकिन उस बात की खुशी क्या मनाऊँ?

क्योंकि वो सहीं-सच्चे थे, इसका मतलब यह ही है **कि हजारो जैन, जैन बनने से पहले ही किसी के हाथों से कटकर मर गये।**

हमारे गुरूदेव ने ज्योतिषादि के ज्ञान से भविष्य में युद्ध की आगाही की हो, तो भी हम तो प्रभु के पास इतनी ही प्रार्थना करेंगे न.... ?

कि गुरूजी तो युद्ध की आगाही कर रहे है, लेकिन हमारे गुरूजी की आगाही झुठी साबित हो तो अच्छे....

यहाँ तक कि हमारे सद्गुरू भी ऐसी ही आशा रखेंगे....

लेकिन दुर्भाग्य से पू. गुरूदेवश्री सच्चे साबित हुए....

आज यह बुक लिख रहा हूँ क्योंकि....

1) जो जैन गर्भ में कट चूके है, वो तो बच नहीं सके.... लेकिन वो पाप करने वाले लोगों को पश्चाताप हो.... वो लोग प्रायश्चित्त करे.... वो लोग इस पाप से बचे.... अगले जन्मों में कोई जैन माता के पेट में आने के बाद जन्म लेने के पहले कटते हुए, जलते हुए, चुर-चुर होते हुए बच सके।

2) आनेवाले भविष्य में जिन माताओं ने अपने पेट के बच्चे को काटने का सोचा होगा, उनके हाथों में ये छोटी सी बुक पहुँचे और उन्हें ये

पाप करने का मन न हो, और पेट में रहा हुआ बच्चा मौत के मुँह से पीछे हटे.... बचे.... । और उनमें से कोई आने वाले दिनों में महान आचार्य बने, साधु बने, महान श्रावक बने, साध्वी बने, श्राविका बने.... ऐसा कितना कुछ हो सकता हैं(ऐसी कितनी चीजे संभावित हैं ।)....

इन सबसे मुझे कुछ तो लाभ, फायदा होगा ही....

यह मेरा स्वार्थ है.... और हाँ ! सबसे बड़ा स्वार्थ तो यह है कि....

3) अगले जन्मों में मैं भी कभी किसी जैन माता के गर्भ में अवतरित होऊंगा, तब....

–मेरी माँ को किसी भी वजह से मुझे मारने की इच्छा न हो....

–मेरी माँ को गर्भपात की सलाह देने वाले न हो....

–मेरी माँ का पूरा परिवार गर्भ सुरक्षा के लिए तड़प रहा हो....

यह सब होगा.... मैंने ये बुक लिखते समय सोची हुए पवित्र भावनाओं के पुण्य प्रभाव से....

यहाँ तक की, यह विषय मेरा नहीं है, मुझे इस विषय के बारे में सायन्स लाइन की जानकारी भी नहीं हैं, फिर भी मुझे लगता है कि मेरी थोड़ी सी भी मेहनत कुछ हद तक तो सफल होगी ही....

जिनाज्ञा विरूद्ध कुछ भी लिखा गया हो तो मिच्छामि दुक्कडं.... !!!!

युगप्रधानाआचार्यसम

पूज्यपाद पं. श्री चन्द्रशेखरविजयजी म. साहेब के शिष्य

मुनि गुणहंसविजय म.सा.

जेठ सुद 5, वि.स. 2073

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ,

पल्लावरम जैन स्थानक, चैन्नई

इस किताब में आगे कही जाने वाली बाते–

(1)गर्भपात क्यों करवाया जाता हैं ?

(2) प्रोब्लम्स व सोल्युशन

(3)गर्भपात कितना बड़ा पाप हैं ?

(4)गर्भपात की कुछ सत्य घटनाएँ....

(5)गर्भपात से होनेवाले नुकसान कौन से... ?

(6)गर्भपात करवा दिया हो तो, अब क्या करना ?

1.गर्भपात करवाने की वजह

1.शादी से पहले हो गई भूल....

आज का जमाना बहुत ही फ्रीडम वाला हैं। मुविज़ देख-देखकर लड़के-लड़कीया हीरों और हीरोईनों को अपना आदर्श मानने लगे हैं। इसलिए शादी से पहले भी बॉयफ्रेंड रखना, उनके साथ प्यार होना, रोमान्स करना, ये सब चीजे शायद नादान उम्रवाली ग्रेज्युएट लड़कीयों को सामान्य लगती है, पाप नहीं लगता....

वैसे भी स्कूल में साथ, कॉलेज में साथ, ट्यूशन में भी साथ.... ऐसे ज्यादा समय तक साथ-साथ रहने की वजह से उनके मन में वासना न जगे ऐसा शायद ही संभवित हैं। उसमें भी जब एकांत मिले, आवेश जगे, गलती कर बैठे.... और फिर कुछ समय के बाद पता चले कि गर्भ रह गया हैं....

तब! वो लड़की घबरा जाती हैं। समाज ऐसा पाप नहीं स्वीकारेगा, परिवार तो ऐसा पाप नहीं ही स्वीकारेगा, अब बिचारी लड़की करें क्या ?

कॉलेज में बोल्ड होकर घुमनेवाली, शेरनी और बाघण जैसी दिखने वाली वो लड़की गर्भ रहने के बाद बकरी और बिल्ली की तरह डरपोक बन जाती हैं।

अब उसके पास एक ही रास्ता बचता है, वो है- **गर्भपात!**

गोलियों के द्वारा या मशीनरी के द्वारा छुपकर, किसी को पता नहीं चले वैसे इस काम को पूरा करती है, और ऐसे काम में मदद करने वाले, पैसे के भूखें राक्षसों की कमी कहाँ हैं ?

उस लड़की को माता नहीं बनना, ऐसा नहीं है.... अगर शादी के बाद गर्भ रहा होता तो उसके अरमान कुछ अलग ही होते, लेकिन यहाँ तो समाज का डर है, और उसके सामने टिके रहने की ताकत किसी में भी नहीं हैं।

प्रश्न: कॉलेजियन अब बहुत होशियार हो गये हैं। साधनों का उपयोग करके ही पाप कर रहे है, इससे गर्भ रहने का सवाल ही नहीं होता....

उत्तर: आपकी बात ऐसे तो सही है, लेकिन

- जिसके पास अभी तक ऐसा विचित्र ज्ञान नहीं है, कपटवृत्ति नहीं है....
- अचानक आवेश में, पहले से कोई प्लानिंग के बिना ही, जो पाप करने के लिए आगे बढ़ते है, तब....

तब साधनों का उपयोग नहीं करें, और तब गर्भ रह जाये, तो

गर्भपात करवाते है.... अगर आपके कहने के हिसाब से कॉलेजियन्स साधनों का उपयोग करते ही होते तो नवरात्री के बाद गर्भपात की संख्या बढ़ जाने जैसी घटनाए कैसे बनती ?

लेकिन उन्होंने साधनों का उपयोग नहीं किया, इसलिए ही यह हो रहा हैं। इसलिए आपकी बात कुछ हद तक सही है, लेकिन पूरी नहीं....

प्रश्नः शादी के पहले होनेवाली इस भूल की सम्भावना कहाँ-कहाँ होती हैं ?

1. नवरात्रि के समय निकली हुई लड़कीया यहभूल करती हैं।
2. कॉलेज में से घूमने जाने का होता है, तब....
3. पढ़ने के बहाने फ्रेंड के घर पर सोने जाते है, तब....
4. कोई शादी या रिसेप्सन में जब देर रात तक रूकते है, तब....
5. वेकेशन में मामा-मासी आदि के घर पर रहने जाते है, तब....
6. माँ-बाप आदि जब बाहर गाँव जाये, तब....
7. माँ-बाप शिविर के लिए 2-3 घंटे तक बाहर गये हो, तब....
8. कॉलेज की छुट्टी होती हो, तब भी ''कॉलेज जाना है'' ऐसा कहकर निकले, तब....
9. कॉलेज मे वार्षिक प्रोग्राम, डान्स आदि करने के लिए सिखाने वाले के पास सीखने जाते है, तब....
10. सगे भाई के सिवाय दूसरों को भाई बनाते है और उनके साथ अधिक सम्बन्ध रखते है, तब....

ऐसी तो बहुत सारी वजह है, जहाँ बिना मैरेज लड़कीया गंभीर भूल कर बैठती है, गर्भ रहता है, और गर्भपात का पाप कर बैठती है....

प्रश्न : इससे बचने के उपाय क्या.... ?

उत्तर : उपायों का विचार-विमर्श दूसरे प्रकरण में करेंगे....

2. शादी के बाद तुरन्त ही गर्भ रहना....

शादी की है, मोज शौक के लिए.... इसलिए सामान्य से पति-पत्नी की इच्छा ऐसी होती है कि शादी के 2-4 साल तक बच्चें नहीं चाहिए।

यदि बच्चा हो जाए, तो उसे सम्भालने में, बड़ा करने में बहुत समय चला जाता है घुमना-फिरना कम हो जाता है, खाना-पीना, संसार के सुख सब कम हो जाते हैं।

जो जिन्दगी जीने के लिए शादी की थी, वो जिंदगी यदि

पूरी हो जाए ....तो यह बात कितने ही दम्पत्तियों को पसन्द नहीं आती उनको बच्चों से ज्यादा संसार के सुख प्रिय होते है और इसलिए ही अगर जल्दी गर्भ रह जाए तो खून करवाने का महान पाप वो कर ही लेते हैं....

3. कैरियर में प्रतिबंध लगे....

थोड़ी लड़कीयाँ बहुत ही होशियार होने के कारण बहुत सारी डिग्री ले चूकी है, बड़ी कम्पनीओं में जॉब करती है(जॉब यानि नौकरी ही है और उसे नौकर ही कहाँ जाता है, पर ये नौकर शब्द तो झाड़ू–पोछा करने वाले पर प्रयोग होता हैं। इसलिए यह शब्द सबकों पसन्द नहीं हैं। इसलिये नये जमाने के लोग नौकरी शब्द नहीं बोलकर जॉब शब्द ही बोलेंगे। बाकी उनके घर पर काम करने वाले नौकर की जो हालत है, वैसी ही हालत बड़ी कम्पनीओं में काम करनेवाले इन बड़े नौकरों की है, छोटे नौकरों के कपड़े बराबर नहीं होते, उनके काम हल्की कोटी के होते है, वो लोग पढ़े–लिखे नहीं होते, बाकी नौकर तो नौकर ही हैं।)

इन लड़कीयों की इच्छाएँ असीम होती हैं। बड़ी डिग्री, काम करने की होशियारी, पापोदय से मिला हुआ विशिष्ट रूप, इन सब कारणों से ज्यादा से ज्यादा विकास प्राप्त कर लेती है, और साथ ही संसार सुख के लिए शादी भी कर लेती है....

'यदि बच्चा हो जाये तो, उसे सम्भालना कैसे.... ? और उसे सम्भाले, तो अपने कैरियर को छोड़ देना पड़े।' ये उन लड़कीयों को पसन्द नहीं होता। इसलिए अगर गर्भ रह जाये, तो काकड़ी की तरह उस गर्भ को काट डालते हैं।

4. गरीबी में बच्चों को पालने का प्रश्न....

–शिक्षण–समाज आदि कारणों से शहर में रहना जरूरी हो गया....

– इसमें अपनी खुद की पुँजी नहीं होती, कम होती है....

– एकदम छोटा घर लेने के लिए भी लाखों लग जाते हैं। भाड़े पर रहे, तो भी ज्यादा भाड़े के सामने आय की रकम कम होती है....

– महंगाई का पार नहीं, दुध–सब्जी, अनाज आदि आवश्यक चीजें भी बहुत महंगी होती है....

– मोबाईल आदि उस के खर्चे का व्यसन होने के कारण अत्यंत जरूरी बन गये हैं....(मोबाईल, वॉशिंग–मशीन, घर–घंटी, टी.वी., कम्प्युटर, कामवाली आदि....)

– धंधे–नौकरी में सतत कोम्पीटीशन के कारण आय कम....

– अगर बच्चा आ जाए, तो छोटे घर में रहना पड़े, उसे

बड़ा करने का खर्च, पढ़ाने के लिए लाखों रूपये.... (शायद एक बालक हो, तो चला लें पर दूसरे–तीसरे के लिए तो मन ना ही कह देगा।)

– और अंत में इच्छा न हो, फिर भी गर्भपात....

– जिसके घर से दीक्षा हुई है, जो युवान खुद दीक्षा लेनेवाला था। शरीर स्वस्थ न होने के कारण न ले सका, उस युवान ने शादी के बाद खुद के संतान की कत्ल करवाई, क्योंकि कम आय में पूरे परिवार और इस नये संतान को वह संभाल नहीं सकता था।

संसार के दुःखों से त्रस्त इस युवान की आँखें इतनी सुख गई थी कि अपने पापों का इकरार करते समय भी पश्चाताप होने के बावजूद आँख में आँसु की बुँद तक नहीं थी।

5. शर्म नं. – 1

एक संतान का जन्म हुआ, दो–चार महिने में दूसरा गर्भ रहे, तो लड़की को शर्म आएगी कि लोग क्या कहेंगे? "इस दंपत्ति को भाव नहीं हैं। अभी एक संतान को सिर्फ दो–चार महीने हुए है ऐसे में दूसरी संतान? पहली संतान को कौन संभालेगा? दोनों की जिंदगी बिगड़ जाएगी।"

लोग ऐसी बातें करेंगे, मजाक करेंगे–मश्करी करेंगे। ऐसे भय से सीधा फैसला "**गर्भपात**"....

6. शारीरिक निर्बलता

कई औरतों के शरीर दुर्बल हो, बारबार प्रसूति सह सके ऐसी शक्ति न हो, कोई औरत को तो एक बार की प्रसूति भी मौत जैसी हालत में लानेवाली हो.... ऐसी हालत में प्रसूति के बजाय गर्भपात पसंद करते है....

7. शर्म नं. – 2

किसी को चालीस की उमर के बाद गर्भ रहे। संतानों की शादी हो गई हो या शादी के लायक उमर हो, यदि ऐसे वक्त में खुद ही "माँ" बने, तो कैसा लगेगा।

जिस औरत की लड़की "माँ" बननेवाली, हो, वही औरत फिर से "माँ" बने, तो आज के समय में अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए वह बड़ी उमर में "माँ" बनना नहीं चाहेगी। अगर गर्भ रह जाएगा तो शर्म के कारण गर्भपात कराएगी।

8. जान का जोखम

डॉक्टर बता दे कि, 'दोनों में से कोई एक बचेगा!' माँ या तो बच्चा! ऐसी परिस्थिति में "माँ" को बचाने के लिए बच्चें को गर्भ में ही खतम कर देते हैं।

9. पेट में लड़की हैं

अगर लड़का ही चाहते हो, किसी को पहले एक/दो/तीन लड़कीयाँ हो चूकी हो.... और पता चले कि "गर्भ में लड़की हैं।" तो उसकी जरूरत न होने के कारण "**गर्भपात...** "

10. जबरदस्ती

माँ की अनिच्छा हो, पर पति, सासु, वगैरह किसी वजह से दबाव डालें, तो उस दबाव से लाचार होकर उसे गर्भपात करवाना पड़े।

11 .सुन्दरता में बिगाड़

माँ बनने के बाद स्त्री का सौंदर्य कम हो जाता है, बिगड़ जाता है.... आकर्षण नहीं रहता, शरीर मोटा हो जाता हैं।(संतान के जन्म के बाद भी)।'यह सब रूप की अभिमानी सौंदर्य लालची स्त्री को पसंद नहीं आता। पति उसके पीछे पागल रहे, देखने के लिए तरसे।'इसलिए वह स्त्री बच्चे का मुख देखने की ख्वाईश को जाने देती हैं।' और खुद पागल जैसी हरकत करके संतान कीकत्ल करा देती हैं।

12. मजबूरी

गर्भ रह गया और तलाक की परिस्थिति आ गई, ... तलाक हो गया। जिंदगी पूरी करने के लिए दूसरी शादी जरूरी हो गई। पर पहले पति की संतान के साथ कोई युवान स्वीकार नहीं करेगा। ऐसे में समाज व्यवस्था के खातिर माता पेट के संतान का गर्भपात करती हैं।

13. गुस्सा

पति या सास-ससुर को संतान प्राप्ति की बहुत ईच्छा हो, स्त्री को गर्भ भी रह गया हो, पर फिर किसी वजह से घर में झगड़ा हो गया। ऐसे में स्त्री को गुस्सा आया। उसकी बदले की भावना जाग उठी। "वे सब संतान की राह देखकर बैठे है न, उस संतान को ही खत्म कर डालूँ!" ऐसी भावना से आवेश में आकर गर्भपात करा देगी।

जिससे पूरा परिवार त्रस्त हो जाएगा।

14. बलात्कार

बलात्कार के कारण यदि गर्भ रह जाता है, तो गर्भवती अपनी इज्जत के खातिर गर्भपात कराती हैं।

शादी से पहले की भूल में खुद गुनहेगार हैं। बलात्कार में दोषित वह स्त्री नहीं। इसलिए तो सरकार ने गर्भपात करवाने की छूट दी हैं।

15. पहले से पता चल जाये की जो संतान आनेवाली है, वह मंदबुद्धि, पागल या किसी गंभीर बिमारी वाली होगी, तो ऐसी संतान को पूरी जिंदगी कैसे सम्भालेंगे? यह सबसे बड़ा प्रश्न हैं। इसीलिए ऐसी परिस्थिति में गर्भपात की सरकार ने छूट दी हैं।

(16) जन्म देनेवाली माँ को जन्म के बाद विचित्र रोग होने की संभावना हो।

(17) माँ को डायबिटिज वगैरह रोग हो, तो उसकी संतान निर्बल होने की सम्भावना है, उसको सम्भालने में तकलीफ उठानी पड़ेगी। इसलिए गर्भपात जरूरी हैं।

(ऐसा शायद ही होता होगा....)

इतने कारण ध्यान में आए है, दूसरे भी होंगे ही। पर इतने में काफी सारे गर्भपात समाविष्ट हो जाते हैं।

2.गर्भपात के कारणों का समाधान

(1) शादी से पहले की भूल

यह भूल होने के जो कारण है, उनसे लड़कीयों को दूर रखना जरूरी हैं।

(1) फिल्म देख-देख कर उनके आदर्श बदल गए हैं। इस पाप भरी जिंदगी में उनको पाप का एहसास नही होता।

लड़कीयों को फिल्म देखने से नहीं रोक सकते तो कोई बात नहीं.... पर उनको शील की सुरक्षा के लिए जान दे देनेवाली और जान ले लेनेवाली सीता वगैरह जैसी महासतीओं के प्रसंग बताओ, भावविभोर बनकर कहो.... उनके दिमाग में बचपन से ही ये संस्कार होंगे तो वे बड़ी भूल नहीं ही करेंगे।

(2) हर साल एकबार लड़कीयों को शिविर में जरूर भेजें। साधु-साध्वी की शिविर में गई हुई लड़कीयाँ महात्माओं के सम्पर्क से कुछ तो सुधरेगी ही। उनमें पवित्रता का प्रेम जरूर फलीभूत होगा।

(3) साधु-साध्वीजी ऐसे समय पर इस विषय पर जोरदार प्रवचन दें और उनको प्रतिज्ञा दे कि "शादी से पहले भूल न करें।"

(4) नवरात्रि, शादी आदि प्रसंगों में लड़की रात को 10 बजे के बाद घर में ही होनी चाहिए.... 10 बजे के बाद अगर घर से बाहर रहना हो तो

माता-पिता या समझदार गम्भीर व्यक्ति उसके साथ होना चाहिए।

(5) लड़की के मोबाईल में कुछ Personal या छिपाया हुआ नहीं होना चाहिए। माता-पिता को हर सात दिन में कभी भी उसे पता न चले, वैसे मोबाईल देख लेना चाहिए। "अनजान नम्बर किसके हैं?" यह चेक कर लेना चाहिए।

(6) बाहरवीं कक्षा तक लड़कीयों कोस्कूल में ही पढ़ाओं और पढ़ाई के समय के सिवा बाहर न जाने दो।

(7) माँ-बाप लड़की को बहुत प्रेम दे, उसका विश्वास जीते, उसका स्नेह जीते.... लड़की को होना चाहिए कि, "मेरे माता-पिता को दुःख हो, ऐसा कुछ मैं नहीं करूंगी।"

काफी लड़कीयाँ घर में निर्दोष प्रेम की कमी की वजह से बाहर के विकृत प्रेम के पीछे खींची चली जाती हैं।

(8) सबसे कठिन फिर भी सुन्दर उपाय हैं। "लड़कीयों को पढ़ाने के लिए स्कूल कॉलेज भेंजे ही नहीं!" उसमें लड़कीयों की जिन्दगी बिगड़ने वाली है, ऐसा मत सोचो।

हाँ! व्यवहारिक शिक्षण जरूरी हैं। इसलिए पू. मुनि हितरूचि वि. म.सा. ने जो गुरूकुल की प्रेरणा की, और उसके हिसाब से अहमदाबाद, केशवनगर के पास और सुरत, टीमलीयावाड के पास जो प्राचीन पद्धति के अनुसार लड़कीयों के लिए गुरूकुल है, वे अत्यंत आदरणीय हैं।

मर्यादा युक्त पोशाक, सिर ढका हुआ वगैरह बहुत सारी बाते....

पू. अरूणोदयसागरजी म.सा. ने भी ऐसा ही गुरूकुल कोबा में शुरू किया हैं।

जैन इस तरफ ज्यादा लक्ष्य दे, और दूसरी तरफ संस्थाएँ देखें कि, "जैनों को अपनी लड़कीयों को इसमें भेजने में कौन सी समस्याएँ आती हैं। और अगर हो सकता हो तो समस्याएँ दूर करें।"

अगर उनको अंग्रेजी सिखानी पड़े या कम्प्युटर सिखाना पड़े, तो इसका स्वीकार करके लड़कीयों के भविष्य का रक्षण कर लेना चाहिए।

यह उपाय भोले! जैन अपना ले तो और कुछ करने की जरूरत नहीं रहेगी।

(2) शादी के बाद तुरन्त गर्भ रहना

बचपन से धर्म के संस्कार न मिले हो, इसलिए नए दम्पतियों को मौज-शोक में ही जिंदगी दिखती हैं। इसलिए तुरन्त बच्चा हो जाए

तो वह उनको अपने सुख में विघ्नभूत लगेगा।

पर ऐसा नहीं होना चाहिए। लौकिक शास्त्रों में सुना है कि, ''बच्चे की एक मुस्कान के लिए हजारों सुख कुर्बान हैं।''

दूसरी बात, सिर्फ मौज-शौक के तुच्छ आशय से संतान को जन्म न देनेवाले, गर्भपात करानेवाले माता-पिता ऐसा पाप करते है कि जिससे भविष्य में उनको सन्तान प्राप्ति नहीं होती हैं।

एक दम्पत्ति ऐसा है कि शादी को बारह साल हो गए। डॉक्टरों को दिखाया, दोनों में कोई प्रोब्लम नहीं है, फिर भी बच्चा नहीं होता। वे संतान के लिए तड़पते हैं। प्रयत्न करते ही रहते है, पर परिणाम **शून्य!**

इसका जवाब डॉक्टर के पास नहीं हैं। क्योंकि दोनों के रिपोर्ट नोर्मल हैं। पर कर्मसत्ता के पास तो इसके जवाब है ही, आपने अपने मौज-शौक के खातिर एक बच्चे की जिंदगी बरबाद की है, तो अब आप लाख कोशिश के बाद भी निष्फल रहेंगे।

एक जैन युवान ने बताया, ''म.सा.! कॉलेज की एक परिचित जैन लड़की ने मुझसे रोते हुए कहा है कि मेरे पति द्वारा मुझे संतान नहीं होती, तो तु मुझे मदद कर, तेरे द्वारा मुझे संतान प्राप्ति होगी....''

म.सा. मैंने उसे कह दिया कि ''मैं तेरे लिए सामायिक करूँगा, प्रार्थना करूँगा.... पर ऐसे पाप के रास्ते पर मदद नहीं करूँगा।''

सोचो तो सही, उस स्त्री को कितनी चाह होगी संतान की, कि वह अपने पति का द्रोह करके परपुरूष के साथ पाप करने के लिए तैयार हो गई। दम्पतिओं! इन सब बातों पर विचार करकें, अपने मौज-शौक की इच्छा को गौण करके बच्चे को मार डालने का विचार भी नहीं करना चाहिए।

प्रश्न : सीधा प्रश्न पूछ लूँ! गर्भ रह जाए, बाद में उसको मारना न मारना यह सब हो, उसके बदले सीधा उपाय यह है कि साधनों का उपयोग करें, तो गर्भ ही न रहें, तो गर्भपात का प्रश्न ही न उठें।

उत्तर : व्यभिचार बढ़ने का मुख्य कारण साधनों का उपयोग ही हैं। समय आने पर बात करूँगा। पर इतना तो तय कर ही लो कि यह विचार तो निकाल ही देना।

इसके बजाय श्रेष्ठ उपाय यह है कि गर्भ रहने की सम्भावना के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन करें.... तो इस प्रश्न का निराकरण हो जाये। सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य की बात नहीं है, पर सन्तान सम्भवकालीन ब्रह्मचर्य की बात है, जो संभव है और योग्य रास्ता हैं।

मौज–शौक के लिए गर्भपात की इच्छा होती हो तो जो माताएँ छोटे–छोटे बच्चों के साथ खेलती हो, उनके दर्शन कर लो। उनका आनन्द देखकर हो सकता है कि वही आनन्द लेने के लिए सन्तान को जन्म देने का निर्णय हो जाए। मौज–शौक की इच्छा गौण हो जाए।

ऐसी माताओं से मीटींग करे, उनकी सलाह लें.... उनकी बातें सूनकर, उनका उत्साह देखकर अवश्य गर्भपात का विचार चला जायेगा।

यह अच्छा उपाय हैं।

जो गर्भपात कराना चाहता हो, वह इतना ही तय करें कि, ''मुझे नन्हें बच्चेवाली, पहले ही बच्चेवाली तीन माताओं के दर्शन करने है और उनके साथ आधा–पौना घण्टा बात करनी हैं।''

आपके विचार बदल जाएँगे, मुझे ऐसा लगता हैं।

सच बात तो यह है कि सन्तान के बाद सारे मौज–शौक बन्द हो जाता हैं। ऐसा कहाँ हैं ? यह बात किसने तुम्हारे दिमाग में डाल दी ? शायद बाह्य दृष्टि से किसी चीज मे विघ्न आते होंगे,पर बहुत कम....

सन्तान को लेकर होटल जाते ही है ना ! बाहर भी जाते हैं। सब करते हैं। शायद सम्भालकर करना पड़े बस इतना ही फर्क है....

कविता गाते है, ''दीकरों मारो लाडकवायो, देवनो दीधेल छे....''

मतलब सन्तान को **God गिफ्ट** समझो।

3. कैरियर में प्रतिबन्धक लगे

स्त्री के मन में रही हुई गलतफहमी उसे उल्टे रास्ते ले जाती हैं। पढ़ी–लिखी लड़की ने मान लिया कि, सम्पत्ति ही कैरियर है, सत्ता–पोस्ट=पद=शोभा वही कैरियर हैं। स्वतत्रंता–स्वच्छंदता ही कैरियर है....

अगर वह ये मान लेती कि मेरी पवित्रता ही मेरा कैरियर है, तो उसे जॉब करने के, पैसे कमाने के, दिखावा करने के शौक ही न होते।

और

ऑफिस वर्क जिस तरह एक कैरियर है वैसे

होम वर्क भी एक कैरियर है वह मान सकते है न ?

क्या अक्षरज्ञान ही ज्ञान है ? उस ज्ञान के सहारे की गई प्रवृत्ति ही होशियारी हैं ? जिस स्त्री को कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, स्वादिष्ट रसोई बनाना आता है; रोटी पकाना आता है, झाड़ू–बुहारी कर लेती है, ऑफिस में सबके बॉस बने पुरूष को अपनी ऊँगली पर

नचाती है और घर में खुद का नौकर बनाती है.... एक अक्षर के ज्ञान बिना सिर्फ अनुभव के आधार पर ऐसे कठिन कार्य करनेवाली स्त्री क्या **कैरियरलेस हैं?**

जॉब वाली स्त्रीयाँ खुद को पूछ लें कि, क्या वे तीर्थकरों की माताओं को, शिवाजी की माता को, महाराणा प्रताप की माता को, हजारों-लाखों महापुरूषों की माताओं को कैरियरलेस मानती हैं? क्या धर्म को, राष्ट्र को, संस्कृति को उत्तम-सन्तान की भेंट देना एक सुन्दर कैरियर नहीं हैं।

ऑफिस मे बैठकर काम करना ही **कैरियर हैं?**

घर के बाहर जाकर किसी बॉस के हाथ के नीचे काम करना ही **कैरियर हैं?**

काम के बदले हर महिने पैसे मिले, वहीं **कैरियर हैं?**

क्या आप के काम के हिसाब से आपका वेतन और पद बढ़े तो ही **कैरियर हैं?**

उन सभी बहनों को एक गुरू के नाते, कल्याण मित्र के नाते, भाई के नाते पूछना चाहता हूँ, क्या संस्कार देना **कैरियर नहीं हैं?**

घर पर स्वतंत्र काम करना, सास के हाथ नीचे काम करना कैरियर नहीं हैं?

क्या घर चलाने के लिए, दूसरे खर्च के लिए पति प्रेम से पैसे दे, कभी-कभी अपना हक जताकर, ज्यादा भी माँग सकते हो.... कभी पति के पैसे चुरा लो, फिर भी वह चोरी नहीं हैं.... ऐसी एक पारिवारिक, आर्थिक जिन्दगी **कैरियर नहीं हैं?**

अगर आप ठीक से काम सम्भलो, तो थोड़े ही समय में पूरे घर के मालिक बन जाओं, यहीं पदवृद्धि है....

अरे! नया मकान आपके नाम से लिया जाए, तो आश्चर्य नहीं.... क्या ये **कैरियर नहीं हैं?**

नौकर बनने का कैरियर क्यूँ स्वीकार करें? आजादी से भरा कैरियर क्यूँ न स्वीकार करें?

हा! बाहर की दुनिया की झगमगाहट ही तुम्हें खींच रही हैं।

वहाँ नए-नए लोंगो से मिलना, नए फंक्शन, पार्टीयॉ, नयी-नयी जगहें.... पर क्या आपका मन इतना निर्माल्य हैं? कि इतनी हल्की चीजों की तरफ खींच जाए?

भिखारी! दो रोटी मिले तो भी भागे....

कुत्ता एकाद रोटी मिले तब भी भागे....

ऐसा भिखारी और कुत्ते जैसा मन है आपका ?

बाहर की झगमगाहट में भिखारी और कुत्ते की तरह प्रशंसा का और पुँछ हिलाने का काम करने लगे ?

तुम्हारे रूप का शिकार, हजारों, नालायक सज्जन करें, वे शिकारी तुम्हें मंजूर है.... उन हिंसक शिकारियों को आकर्षित करने के लिए रूप को ज्यादा विकृत बनाने के लिए, सेन्ट–साबुन–उद्‌भट वस्त्र सब मंजूर है आप को.... यहीं तुम्हारा कैरियर हैं ?

बिस्कीट के लिए कुत्ता मालिक का फेंका हुआ बॉल लेने के लिए दौड़े, मालिक के नचाने पर नाचे.... वहीं हालत बन्दर की.... वही हालत सर्कस में काम करने वालो की।

आप भी पैसे के लिए, या तो मानी हुई ऊँची जिन्दगी जीने के लिए बॉस की खुशी के लिए सब कुछ करते हो, तो क्या आप कुत्ते या बन्दर जैसे नहीं बने क्या ?

यह मात्र एक जैन साधु का उपदेश मत समझना....

पर एक जैन साधु का अनुभव समझना।

हमारे पू. गुरूदेव श्री के अनुभव के आधार पर कहूं तो, बाहर काम करनेवाली लड़की या स्त्री **नौकरानी हैं।**

घर में काम करनेवाली लड़की या स्त्री **रानी है....**

अब नौकरानी बनना या रानी ? यह निर्णय आपको करना हैं।

फिर भी एकबार मान लें कि महंगाई है, तो जॉब जरूरी है और बच्चों को सम्भालने में जॉब छोड़नी ही पड़े, जो परिस्थिति वशात् उचित नहीं है, इसलिए आप बच्चों को मारने की इच्छा रखते हो....

पर ऐसी स्त्रियों के लिए यही सच्चा रास्ता है कि साधन का उपयोग बन्द करके, गर्भसम्भव काल में ब्रह्मचर्य का पालन करके गर्भ न रहें,उसका ध्यान रखें। तो गर्भपात का समय नहीं आयेगा।

फिर भी गर्भ रह गया हो, तो यह किताब पढ़ने के पहले ऐसी सलाह देनेवाला कोई न मिला हो और भूल हो गई हो, या फिर किताब पढ़ने के बाद भी भूल हो गई हो, और गर्भ रह गया.... पर अभी गर्भपात नहीं करवाया हो तो ऐसी बहनों से मेरी विनती है कि **'ठहर जाना'** संतान अपना पुण्य लेकर आता हैं। उसका पुण्य आपको भी काम आएगा। आप थोड़े समय

के लिए जॉब छोड़ देना। फिर से मिल जाएगी। उसके लिए बच्चे को Baby Sitting में रखना पड़े.... इतना पाप करना पड़ेगा.... पर सन्तान को मार डालने से अच्छा है कि उसे Baby Sitting में या हॉस्टल में रखकर बड़ा करें.... यह पाप छोटा हैं। महान जैन शासन में जन्म लेने का महापुण्य लेकर आनेवाले उस महान आत्मा को कुक्षी में से धक्का देना, मार कर वापिस भेज देने का पाप मत करना।

जॉब करनेवाली माताओं के बच्चों को सम्भालने के लिए Baby Sitting चलते ही है, वृद्धाश्रम की तरह Baby Sitting भी समाज के लिए कलंक है, परन्तु ऐसे कलंक गर्भपात जैसे बड़े पाप से बचने के लिए अनिवार्य हो गए हैं।

श्रेष्ठ मार्ग तो यही है कि जॉब की झंझट छोड के सच्ची माँ बनना.... पर....

(4) गरीबी:

यह कारण गर्भपात के लिए व्यापक बना हैं। यह कितना सच हैं ? यह विचार दिमाग में बैठ जाता है और इसके फलस्वरूप निर्णय होता है **''गर्भपात!!!!''**

गरीबी से गर्भपात करवाने वाले एक परिवार से मेरी बातचीत हुई थी। मुझे लगता है,की यह उपयोगी साबित होगी।

साधु: आप गर्भपात क्यूँ करवाते हो ?

परिवार : पैसे नही है बच्चे को सम्भालने के।

साधु: घर में कितने जन हो ?

परिवार : पाँच....मम्मी, पापा, मैं और श्राविका(!) और एक लड़की

साधु : पाँच का तो हो ही जाता है न ? इतनी आय तो है न ?

परिवार : हाँ....

साधु : तो आनेवाले संतान को पाँच में समाविष्ट नहीं कर सकते।

परिवार : हम पाँच के निर्वाह में भी खींचातानी होती हैं। काटकसर करनी पड़ती है तब जाकर पूरा होता हैं।

साधु : तो थोड़ी ज्यादा काटकसर कर के इस छट्ठे को भी समाविष्ट कर लो।

परिवार : काटकसर की भी हद होती है न !

साधु : हद तो आप ही तय करते हो न ! सोच लो यह आपकी लड़की अभी गर्भ में होती, तो आप क्या करते ? 'चार का मुश्किल से पूरा होता है, इसलिए गर्भपात कराएँगे.... ' ऐसा ही कहते न.... मतलब तब आपने

काटकसर की हद चार की रखी थी, पर बच्चा आ गया है, तो अब पाँच की रखी हैं। आप निर्णय करें तो छहका निर्वाह भी हो सकता हैं।

परिवार कुछ न बोला, पर लगा की सोचते होंगे कि' म.सा. आपको तो बोलना है, बाकी हमारा मन जानता है कि हम कैसे जीते हैं ?'

बात गलत भी नहीं थी पर नये आनेवाले को मार डालने का निर्णय गलत था।

मैंने फिर से पूछा....

साधु : पाँच का तो कर लोगे न ?

परिवार : करेंगे ही, और कर ही रहे हैं।

साधु : तो ऐसा करो, आपके माता या पिता से कहो कि मर जाए....

यह सुनकर वे स्तब्ध हो गए। शायद गुस्सा हो गए, मेरे सामने देखते रहे। ''मैं क्या बोल रहा हूँ।'' उन्होंने सुना था, फिर भी अत्यन्त विचित्र लगा। कोई साधु ऐसा कैसे बोल सकता है कि माँ-बाप में से किसी एक को मर जाने के लिए कह दो। मैंने बोलना चालु ही रखा।

साधु : देखो, पेट में जो बच्चा है वह भी अब परिवार का सदस्य हैं। उसका सिर्फ जन्म लेना बाकी है, अन्दर तो जन्म हो ही गया है न!

अब परिवार के एक सदस्य को मार सकते हो, तो मैंने तो इतना ही कहा है कि इस सदस्य के बदले दूसरे सदस्य को मरने दो.... एक जाएगा, दूसरा आएगा.... आपको तो पाँच का ही पालन-पोषण करना है न!

परिवार : पर कोई खुद मरने को तैयार नहीं होता।

साधु : गर्भ का बच्चा भी खुद मरने के लिए कहाँ तैयार हैं ?

परिवार : इसलिए तो **गर्भपात!**

साधु : शाबाश! गर्भपात शब्द इस्तेमाल करके आप खुद को ठग रहे हो। स्पष्ट क्यों नहीं कहते कि गर्भ का बालक खुद तो मरेगा नहीं। आत्महत्या नहीं करेगा, इसलिए हम उसका खून कर रहे हैं।

तो एक सलाह दूँ? आपके माँ-बाप खुद मरने के लिए तैयार नहीं है तो आप तो मरवा सकते हो न ?

परिवार : म.सा.! (गुस्से में आए हुए भाई)

साधु : ऊँची आवाज में बोलने से नहीं चलेगा। (मैंने भी स्पष्ट और दृढ़ शब्दों में बोलना जारी रखा।) दया हत्या(mercy killing) के काम

चलते ही हैं। आपकों माँ-बाप को गोली नहीं देनी पड़ेगी। पाँच लाख की सुपारी भी नहीं देनी पड़ेगी। पर जिस तरह इस बच्चे का गर्भपात डॉ. से करवाते हो उसी तरह डॉ. द्वारा जहर का इन्जेक्शन देकर शांति भरी मौत दे सकते हो आपके माँ या बाप को।

असमंझस में आ गए वो भाई....

माँ-बाप को कैसे मारें? यह प्रश्न उसकी आँखों में था। वैसे वे समझ ही गए थे कि म.सा. माँ-बाप को मारने की प्रेरणा नहीं दे रहे, पर समझा रहे है कि अगर माँ-बाप को नहीं मार सकते, तो पेट के सन्तान को कैसे मार सकते हैं?

इसलिए वे थोड़े शान्त हुए। मेरी जहरीली वाणी भी पचा गए।

साधु : सच बात तो यह है भाई? कि जो जन्म ले चूके है उसे मारो या मरवाओ तो लोग और सरकार उसे खून कहते है। समाज और सरकार का भय आपको ऐसा करने से रोकता हैं।

पर गर्भ के बच्चे को मरवाना खून नहीं माना जाता। सरकार उसे खून नहीं मानती, लोग उसे व्यवस्था मानते है, मरनेवाला शिकायत नहीं कर सकता.... इसलिए गर्भपात कराने से आपको या किसी को डर नहीं रहता।

पोप्युलेशन रोकने के लिए बेरहम सरकार ने, लोगों ने गर्भपात को अच्छा माना, उसे प्रोत्साहन दिया। लोगों ने **ब्रह्मचर्य-पालन** नामक उपाय के बारे में तो सोचा ही नहीं। क्योंकि सबको भोग-सुख चाहिए।

बाकी, आप ही मुझे बताओ? अगर सरकार गर्भपात करनेवाले या करवानेवाले को फाँसी या 20 साल जेल की सजा करें तो कोई भी डॉ. या परिवार गर्भपात करवाने के विचार से ही डरेगे या नहीं?

परिवार : आपकी बात मेरे मन में बैठती है, पर संतान के जन्म के बाद उसके खाने-पीने के, बीमारी के, पढ़ाने के खर्चे, सब को कैसे पहुँच पाएँगें।

साधु : भाग्यवान! यह सब खर्चे क्या करने ही पड़ेगे। काफी तो कम भी हो सकते हैं।

फिर भी हम दूसरा विचार करते हैं। नये आने वाले की बीमारी के खर्च के बारे में तू सोचता है, पर तेरे माँ-बाप की बीमारी के खर्च का सोचा? वे तो बूढे हो गए हैं, इनका खर्चा भी बड़ा होगा न? तो क्या उस चिंता से उनको मार डालने के लिए तू सोचता हैं? वे खुद आत्महत्या कर लें, ये बात तुझे पसन्द हैं। नहीं ना?

तो नए बच्चे को तो ऐसी बड़ी बीमारी की संभावना कम ही है, तो क्यों बोझ लेकर घूमता हैं।

दूसरी बात....

तेरे माँ-बाप को संसार में आए 60 साल हो गए, तुझे भी 35-40 हो गए, तुम चारों के पुण्य की परीक्षा हो गई कि तुम्हारे भाग्य में सम्पत्ति नहीं है, शायद भूतकाल में थी पर अब चली गई....अब आप चार के पुण्य का उदय होने की शक्यता नहीं लगती।

अब तो जो भी शक्यता है वह इस लडकी की और आनेवाले दूसरे बच्चे की हैं। वे दोनों अभी नए हैं। कुछ समय बाद उनके पुण्योदय की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता। उनका पुण्योदय तेरे काम आएगा। तुझे ऐसे उदाहरण दूँगा कि खाने-पीने की तकलीफ के कारण गर्भपात के बारे में सोचनेवाली पत्नी को रोककर बच्ची का जन्म होने देनेवाले वह उत्तम श्रावक आज करोड़पति हैं।

तुम अपने पुण्य से सुखी हो जाओ, ऐसी सम्भावना अब नहीं हैं।

तो इन दो बच्चों के पुण्य के भरोसे सुखी होने की सम्भावना को अपने हाथों क्यों खतम करते हो। एक प्रयत्न तो कर लो....

क्रिकेट मैच में चार बैट्समेन आउट हो गए, पर पाँचवा और छट्ठा दोनों नए है.... उनकी शक्ति का अंदाजा नहीं है.... पर शायद अच्छी बैटिंग कर लें.... ऐसी अपेक्षा सब रखते हैं। इसीलिए उनकी आश पर जीतने की आस तक नहीं गँवाते।

आपके लिए यह आनेवाला बच्चा आशास्पद बेट्समेन जैसा हैं। तू इस बैट्समेन को आउट मत कर। शायद वो तुम्हारी भूल को सुधारकर विजय दिलवा दे, और वह विजय उसकी अकेले की नहीं होगी, वह मेन ऑफ द मैच भले ही बने, पर विजय पूरी टीम की मानी जायेगी। जीरो रन पर आउट होनेवालो की भी होगी।

परिवार : बीमारी का खर्च तो अनिश्चित हैं। पर खाने-पीने का, पढ़ाने का और कपड़ो के खर्च तो करने ही पड़ेंगे न! उनको पहुँचना कठिन हो जाता हैं। उसका क्या?

साधु : मैंने उपर जवाब दे दिया है कि आप चारों की पुण्य की कमी के कारण इस बेचारे आनेवाले के लिए भी समज बैठे हो कि उसे भी दुःख ही मिलेगा?

आप ऐसा क्यों सोचते हो कि आनेवाले को रोटी-कपड़ा-मकान देनेवाले आप हैं?

आपकी क्या हैसियत है कि आप दें। आनेवाला अपना पुण्य लेकर आता है, उसका पुण्य होगा तो उसे सब मिल जाएगा। आपकी

होशियारी से नहीं मिलेगा। आप तो शायद निमित्त बनेंगे बाकी तो उसका पुण्य पार करायेगा। पुण्य नहीं होगा तो आप चारों की तरह निष्फल रहेगा, पर उसे अपने पुण्य की परीक्षा का मौका तो देना पड़ेगा न?

अच्छे बैट्समेन आउट हो जाने के बाद, हार निश्चित हो जाने के बाद, कई बार पुछल्ले बल्लेबाजों ने विजय दिलाई है, ये बात आप मत भूलें। आपके पराजय के कारण आपके बच्चे भी पराजित हो जाएँगे, ऐसा आप क्यूँ मान लेते हो?

दूसरी बात....

आपके अपने लड़के से पुछिए कि 'बेटा! हम तुम्हें कुछ भी खाने को नहीं दे सकेंगे, कपड़े भी नहीं दे सकेंगे, पढा भी नहीं सकेंगे.... तो तू क्या करेगा? हमारे पास दो ही विकल्प है, या तुम्हें मार डालें, या तो अनाथ आश्रम में रखें.... बोल, क्या करेगा?

आप मुझे कह दे कि लड़का क्या पसंद करेगा। आपके द्वारा मौत? या अनाथ आश्रम?

परिवार : सीधी बात है, मरना कौन पंसद करेगा? दूसरा कुछ भी न हो सके तो अन्त में अनाथ आश्रम पसन्द करेगा।

साधु : तो गर्भ का बालक भी यही कहता है कि 'मम्मी पापा आप मुझे नहीं खिलाओंगे तो चलेगा, कपड़े नहीं पहनाओगे तो चलेगा, पढ़ा नहीं पाओगे तो चलेगा.... **पर प्लीज! मुझे मार मत डालो।** मुझे सरकारी स्कूल में पढ़ाओंगे तो चलेगा, फटे कपड़े पहनाओगें तो चलेगा, बचा-कुचा खाना दोंगे तो चलेगा.... और अगर यह भी न हो सके तो जन्म के बाद किसी संस्था में रख देना। आज पूरे विश्व में ऐसी हजारों संस्थाएँ चल रही हैं।' इस बालक और गर्भस्थ बालक दोनों के उत्तर में कोई फर्क नहीं होगा।

परिवार : देखो, म.सा. जन्म देने के बाद तो कैसे भी करके सम्भालेंगे ही, अनाथ आश्रम में तो नहीं ही रख सकते। हमारा मन नहीं मानेगा। समाज में भी ठीक नहीं लगेगा।

साधु : आप खुद से ही पूछीएँ कि जन्मे हुए बच्चे को अनाथ आश्रम में छोड़ने के लिए मन तैयार नहीं है और उसी बच्चे को गर्भ में मारने के लिए आपका मन मान जाता हैं। और मान ही गया है न?

और रह गई बात समाज की! समाज में बुरा न लगे, इसलिए आप बच्चे को अनाथ आश्रम में नहीं भेजेंगे, पर उसे मार डालेंगे? इसका अर्थ कि समाज में आपका बुरा न दिखें ये जरूरी है, परन्तु ''बच्चे का

मरना'' यह इतना महत्त्व नहीं रखता।

इसलिए आप बच्चे को मारने के लिए तैयार हो गए हो पर अनाथ आश्रम भेजने के लिए तैयार नहीं हो सकते।

परिवार : पेट के बच्चे को देखा नहीं है, इसलिए अभी ममता से नहीं बन्धे।

साधु : यह बात एक अपेक्षा से सच होगी, पर दूसरी अपेक्षा से गलत हो सकती हैं।

आज ऐसी लाखों माताएँ होंगी जिन्हें जब पता चलता है कि ''मेरे पेट में बच्चा हैं।'' उसी समय से उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। उसने बच्चे को नही देखा, फिर भी उसके लिए नौ मास कितना सब कुछ करती हैं। अपनी कितनी इच्छाओं को गौण कर देती हैं। उसका पिता भी उन नौ महिनों में कितना खुश होता हैं। कैसी-कैसी कल्पनाएँ करते हैं?

त्रिशला माताका दृष्टांत प्रसिद्ध हैं। प्रभु वीर पेट मे थे और माता को उनके लिए कितना प्रेम था.... यह तो प्रसिद्ध है और गर्भवती माताएँ भी इस बात का स्वीकार करेगी। (जन्म के बाद विशेष स्नेह होता है, हो सकता हैं।)

आपकी समस्या यह है कि गरीबाई की, महँगाई की चिंता तुम्हारे मन पर इतनी सवार हो गई थी कि और कुछ आप सोच ही नहीं सकते थे। आपको मार्गदर्शन देनेवाला कोई नहीं था। तुम्हारी उन चिंताओं की चिता में ही तुम्हारी गर्भस्थ बालक के प्रति ममता होने से पहले राख हो गई। उस ममता का ही आपने गर्भपात किया हैं।

एक बार सारी चिंताएँ एक तरफ रख दो, सिर्फ कल्पना करो कि, ''तुम सुखी हो, तुम्हें सम्पत्ति की कोई कठिनाई नहीं हैं।'' और फिर प्रसन्न मन से सोचोंगे तो गर्भस्थ शिशु के प्रति ममता जाग उठेगी। तुम माँ बन जाओगी, तुम्हारा मातृत्त्व खिलने लगेगा। एक बार ऐसी ममता हो जाएगी कि दुनिया की कोई ताकत तुम्हें गर्भपात करवाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकेंगी।

और बहन!

विद्वान तो कह गये है कि, ''मेरे शासनकाल में गरीब परिवारों में रत्न तुल्य संताने जन्म लेंगी....'' तो क्या पता तुम्हारी कुक्षी में कोई ऐसा रत्न आ गया हो। शासन के उस कोहिनूर रत्न का विनाश करने का घोर पाप बहन! कम से कम तुम तो ना ही करना।

किसी श्रीमंत के द्वारा तुम्हें बच्चें के भरण-पोषण के खर्च के लिए लाख रूपिये दिला सकता हूँ, पर ऐसा करके मुझे तुम्हारे मातृत्व,

तुम्हारी खुमारी बिक जाए ऐसा नहीं होने देना। तुम ही संघर्ष करके बच्चे को बड़ा करो। गरीबी में, दो आँसु गिराके, खुद भूखे रहकर भी उसे बड़ा करो, तुम छोटे-बड़े काम करके भी बच्चे को बड़ा करो। तुम सिलाई काम , खाखरा-पापड़ बनाने का काम, कपड़े-बर्तन धोके, रसोई बनाकर भी बच्चे को बड़ा करो। उस वक्त तुम्हारा मातृत्व खिल उठेगा। तुम्हारी खुमारी गंगानदी का पूर बनेगी। और शिशु कमल की तरह खिल उठेगा। श्रीमंतो की सम्पत्ति के भार के नीचे उस मातृत्व और खुमारी को दबाकर मारना मैं नहीं चाहता।

भावविभोर बनकर, आँसू के साथ जब मैंने उस परिवार को, उस भावी माता को प्रेरणा दी.... तब वे भी गद्‌गद् हो गए। और वो बहन बहुत रोने लगी।

गरीबी की पीड़ा, गर्भपात के गलत निर्णय का पश्चात्ताप नया रास्ता मिलने से मिली हुई प्रसन्नता, नए शिशु के आने से जीवन में परिवर्तन आने की महान आशा.... ऐसी कई बातें उनके आँसु द्वारा बाहर निकल आई।

और निर्णय ले लिया, ''हम मर जाएँगे, पर गर्भपात नहीं कराएँगे''। '' म.सा. ! और संकल्प करते है कि आनेवाला शिशु शासन को समर्पित करेंगे यानी अगर वह दीक्षा लेना चाहेगा तो हम उसे कभी नहीं रोकेंगे। शासन की अमानत समझकर रखेंगे।''

परिवार : म.सा. एक बड़े पाप से बचाकर आपने हम पर अनंत उपकार किया। पर यह पाप करने का विचार हमने किया, उसका क्या प्रायश्चित ?

साधु : आपका दृढ़ निर्णय ही आपका प्रायश्चित हैं। मैं ईश्वर को प्रार्थना करूँगा कि आपकी सम्पति की गरीबी, आपके हृदय की श्रीमन्ताई को कहीं छीन न लें। बल्कि आपकी हृदय की श्रीमन्ताई आपकी सम्पत्ति की गरीबी को दूर करके आपकी श्रद्धा को बढ़ाने वाली बनें।

और जब उस परिवार ने हँसते हुए विदाई ली तब मैं उन्हें देखता ही रहा। प्रभु से प्रार्थना करता रहा कि ,''इस माँ की कुक्षी में हेमचन्द्रसूरी जन्म लें, ऐसा करना प्रभु ! जिससे मुझे देवसूरि बनने का लाभ मिलें। और यशोविजय प्रगट हों, ऐसा करना प्रभु ! जिससे नयविजय बनने का लाभ मुझे मिलें।''

और लम्बे समय तक उन्हीं विचारों में मेरी भावधारा और अश्रुधारा अविरत चलती रहीं। मुझे पता ही न चला था। वो तब छुटी, जब शिष्य ने आकर कहा, ''गुरूजी पधारीए गोचरी आ गई हैं।''

5. शर्म नं. 1

एक संतान को जन्म देने के बाद थोड़े ही महीनों में दूसरे की बारी आए, वह शरम नं. 1 हैं। इसमें शर्म की क्या बात हैं ?

क्या समाज ऐसा मानता है कि 'एक बच्चे के जन्म के बाद थोड़े महीने दम्पत्ति ब्रह्मचर्य का पालन करें ? नहीं न....'

तो क्या समाज ऐसा मानता है कि 'एक के जन्म के बाद थोड़े ही महीनों में दूसरा गर्भ नहीं रह सकता ? नहीं ना....'

तो फिर जो भी हुआ है, वह सामाजिक हुआ हैं। उसमें शर्म कैसी ?

प्रश्न : समाज में ऐसा मानते है कि, 'एक के जन्म के बाद दूसरे के जन्म में अन्तर होना चाहिए।' दूसरा गर्भ जल्दी न रह जाए, उसकी सावधानी रखनी चाहिए। सभी दम्पत्ति ये सावधानी लेते ही हैं। उसमें चूक हो जाए तो सबकी नजर में आ जाते है और मजाक का विषय बन जाते है.... इसलिए सबकी नजर से बचने के लिए यह गर्भपात का रास्ता लेना पड़ता हैं।

उत्तर : आपकी बात मैं समझ गया। पर मैं पूछता हूँ कि अगर थोड़े ही समय में गर्भ रह जाए तो उसमें कोई गम्भीर भूल या पाप कहा जा सकता हैं ? कि जिसकी वजह से आपको घबराना पड़े ?

प्रश्न : पर लोग कैसी नजर से देखेंगे ? कैसी-कैसी बाते करेगे ?

उत्तर : लोगों का तो यही धंधा हैं। लोगों में पवित्र सीता को रावण के वहाँ भ्रष्ट हुई साबित करने की ताकत हैं।

इसलिए मजाक-मश्करी से जितने घबराओंगे उतनी ही लोग ज्यादा मजाक-मश्करी करेंगे। पर अगर आप इस बात को सहज लेंगे, हँसते हुए कहेंगे कि 'मुझे तो जुड़वे बच्चे होंगे, अगर दो-तीन साल में हो तो दोनों को अलग-अलग बड़ा करने में ज्यादा परेशानी होती। ये तो दोनों एक रीत से एक साथ बड़े करने होंगे.... कितनी शांति....' तो उन सब की बोलती ही बन्द हो जाएगी।

दूसरी बात....

दुनिया में रोज-रोज इतनी घटनाएँ घटती है, मिडिया के कारण सबके पास इतनी जल्दी पहुँच जाती है कि लोगों को आपके बारे में ज्यादा दिन चर्चा करने का मौका ही नहीं रहता। आपकी बात भूल जाएँगे। नई बातें आती ही रहेगी। आपको सिर्फ थोड़ा समय वह चर्चा सहन करनी होगी।

आपका भाग्य जोरदार होगा तो अल्पसमय में दूसरे गर्भ के समाचार के साथ-साथ ऐसे समाचार आएँगे कि आपकी बात धरती में दब जाएगी।

तीसरी और सबसे महत्त्व की बात....

अल्पकाल में दूसरा गर्भ रह गया, और शायद ये दोष है तो भी ये आपका दोष है, तुम्हारें दोष की सजा उसे क्यों ? ऐसा अन्याय तुम

कैसे कर सकते हो ?

तुम्हारे दोष की सजा है, थोड़ी बहुत मजाक-मश्करी सहन करनी पड़े वहीं ! तो ये तुम्हारी सजा है, तुम भुगतो। तुम अपनी सजा से बचने के लिए शिशु को मौत की सजा नहीं दे सकते। तुम्हारे माँ-बाप उमर के कारण विचित्र व्यवहार करते हो, जिससे तुम्हारी मजाक होती हो, तो क्या माँ-बाप को मार डालोगे ?

तुम किसी और को नहीं खुद को पूछो.... ।

तुम्हारे जैसे बड़े को, उनकी मजाक-मश्करी सहन करनी पड़े, यह सजा और तुम्हारे पेट के शिशु को मारना पडें ये सजा.... दोनों में से कौन सी सजा बड़ी ?

तुम्हें शर्म तो यह आनी चाहिए कि,

तुम इतने बड़े, समझदार होकर भी यदि सामान्य मजाक सह नहीं सकते, तो वह बच्चा मौत की सजा कैसे सहेगा ?

तुम ग्रेज्युएट हो, पढ़े-लिखे हो.... ऐसा मुझे नहीं लगता वरना ऐसी मुर्खता तो गाँव के लोग भी न करते, तुम कैसे कर सकते हो ?

अब सुधर जाओ, तो ठीक....

(6) शारीरिक निर्बलता

व्यवहारिक दृष्टि से यह कारण जायज हैं। स्त्री माँ बनना नहीं चाहती ऐसा नहीं हैं। पर शरीर दुर्बल है और प्रसूति में उसकी निर्बलता बढ़ सकती है.... ऐसा हो सकता हैं।

निर्बलता के बहाने दूसरी कोई मैली भावना तो नहीं है न ?

निर्बलता का बहाना गलत तो नहीं है न ? अर्थात् माया नहीं पर भ्रम हो कि, 'मेरा शरीर दुर्बल हैं।'

अगर निर्बलता का अंदाज हो तो पहले से ही गर्भ न रह जाए ऐसे उपाय करने चाहिए। मतलब साधन का उपयोग नहीं पर गर्भसम्भव में ब्रह्मचर्य का पालन....

निर्बलता का कारण अशाता कर्म हैं। इस कर्मबंध का कारण किसी को दुःख देना यह हैं। पूर्वजन्म में किसी को दुःख दिया है, इसलिए इस जन्म में शरीर निर्बल हैं। पर अब गर्भपात करवाओंगे तो पंचेन्द्रिय जीव को, पेट के शिशु को दुःख देनेवाले बनोगे, जिससे अतिभयंकर पाप कर्म बंधेगा.... ऐसी गलती तो नहीं ही करनी चाहिए।

निर्बलता सहन नहीं होती तो उससे भी हजारगुना ज्यादा भयंकर

ऐसा तुम्हारे खुद के ही गर्भ का कट जाना कैसे सहन होगा? और इतनी समझ तो आपमें होगी ही।

उसके बदले सन्तान को जन्म दे दो, निर्बलता सहने की तैयारी रखो, जिससे भविष्य में आपको खुद गर्भ में कट जाना न पड़े.... ।

और हो सकता है कि जीवदया के कारण, पापभीरूता से गर्भपात न करवाने से, तुम्हारा अशाताकर्म कम हो जाएँगा, शाता प्रचुर बंधेगी, शायद तुरन्त उदय में आएगी और अभी जो निर्बलता है वो दूर हो जायेगी।

7. शर्म नं. – 2 :

जिसके एक सन्तान ने दीक्षा ली है, ऐसे एक बहन की घटना! पाँच सन्तान को जन्म देने के बाद 45 के आसपास नया गर्भ रह गया और शर्म से गर्भपात करवाया। (सन्तान ने तो बाद में दीक्षा ली, परिवार में किसी को कुछ पता नहीं था।)

इसका जवाब शर्म नं. 1 में मैंने दे दिया हैं। इसके उपरांत ऐसी बहनें देवकी को याद रखें। देवकी को सात संताने हुई, छः तो जन्म से ही अलग हो गई, सातवें कृष्ण भी अलग हो गए। काफी साल बीत गए। महाभारत का युद्ध खतम हो गया। कृष्ण तो कभी के वासुदेव बन गए थे। उन छः पुत्रों ने नेमिनाथ प्रभु के समीपे दीक्षा ले ली थी। बाद में सारे भेद खुले और देवकी को एक सन्तान को खेलाने की भावना हुई और कृष्ण ने अट्ठम करके देवकी को गजसुकुमार नाम के लड़के की प्राप्ति करवाई।

विचार तो करो कि देवकी बड़ी उमर की होने के बाद, अरे! दादी और परदादी भी बनने के बाद मम्मी बनी। शांब–प्रद्युम्न पौत्रों के जन्म के बाद देवकी फिर से माता बनी.... उनको क्या शरम आई.... ?

ये पूरी घटना विस्तार से जान लेना, और जब भी आपके जीवन में और आपके सम्पर्क में रहनेवाले किसी के भी जीवन में बड़ी उम्र में गर्भ रहने की घटना बने तब उस शरम को दूर करने के लिए इस प्रसंग का बहुत अच्छे से उपयोग करना। किसी की चर्चाओं की चिंता नहीं करनी, और उसमें भी बुद्धि–नेतृत्त्व बिना के वर्तमान पापी समाज की चिंता तो बिल्कुल भी नहीं करनी चाहिए।

इस समाज को तो ख्याल भी नहीं है कि, उनको तो ऐसी स्त्रीयों की भरपूर प्रशंसा करनी चाहिए, कि, ''उन्होंने गर्भपात नहीं करवाके इस उम्र में भी मातृत्व का स्वीकार किया।''

लेकिन ऐसी सद्बुद्धि जिस दिन समाज को आयेगी,

उस दिन सतयुग ही होगा.... और उसकी शक्यता अभी तो है ही नहीं....

8. जान का जोखम

बतायें हुए 13 कारणों में से सबसे महत्व का कारण ये हो सकता हैं। ये ऐसा कारण है कि जिसमें साधु को पूछने में आये तो, वो भी 'क्या जवाब देना?' ऐसी चिंता में फँस ही जाये।

डॉ. ने बोल दिया कि, 'यदि माँ को बचाना हो तो संतान को खतम करना होगा, और यदि संतान को बचाना हो तो माँ को गुमाना पड़ेगा....'

अभी इसमें साधु भी क्या बोलें....? और इसमें 'डॉ. गलत-गलत डरा रहे हैं।' ऐसा भी नहीं हैं।

इसमें उनको ज्यादा पैसे मिल रहे हो, इसलिए वो झुठ बोल रहे है, ऐसा भी नहीं हैं।

ज्यादातर डॉ. इस मामले में बेईमानी नहीं करते। हाँ! उनको कम ज्ञान हो सकता है, लेकिन इस मामले में उनकी कोई गलत भावना देखने को नहीं मिलती....

और इसमें भी ऐसे मामले में एक ही डॉ. का अभिप्राय लेने के बाद उसे कोई मानता नहीं हैं। इसमें तो 2-4 डॉ. के अभिप्राय भी लिये जाते हैं। उन सबका एक ही जवाब आये, फिर ये बहुत ही गंभीर बात हो जाती है कि 'किसको बचाना? सन्तान को? या माँ को?....' ज्यादातर तो पति-परिवार आदि स्त्री को ही बचाने का निर्णय लेते है, क्योकि

1. वो चली जायेगी तो सन्तान को बड़ा कौन करेगा....? सम्भालेंगा कौन?.... दूसरी शादी करनी पड़ेगी, नई स्त्री लानी पड़ेगी, ये सब आसान नहीं हैं।

2. ये स्त्री होगी तो आज नहीं तो कल भविष्य में फिर सन्तान की प्राप्ति होगी।

3. यदि पहले एक सन्तान भी हो गया हो तो, अभी दूसरी अपेक्षा इतनी नहीं रहेगी, जब की स्त्री की जरूरत तो पड़ने ही वाली हैं।

इसलिए! निर्णय लिया जाता है गर्भपात का!

जैन धर्म, जैन शास्त्र इस बारे में क्या कहते हैं....? ये सोचना चाहिए....

इसमें डॉ. का अभिप्राय तो हमेशा के लिए एक ही होता है, माँ को बचाओ....

और परिवार का अभिप्राय भी ज्यादात्तर यही होता है....

इस बारे में जैन साधु तो यह ही कहते है कि, 'दोनों को बचाने की मेहनत करनी फिर तो जैसी भवितव्यता....'

प्रश्न : लेकिन ! दोनों में से किसकी मृत्यु में ज्यादा पाप हैं ?

उत्तर : जब दोनों में से एक को भी मारने की भावना ही नहीं है, दोनों में से एक ही बचने की आशा है.... इसलिए एक को बचाया जाता है, तब दूसरे की मृत्यु की अनुमोदना मन में नहीं होने से सच में तो कोई पाप नहीं लगता।

शास्त्र में बताया गया है कि, 'साधु षट्काय की रक्षा का ही उपदेश देते है, लेकिन ! जब गृहस्थ इसके लिए तैयार ना हो, मतलब दीक्षा लेने के लिए तैयार न हो तब ! साधु कहते है कि " त्रसकाय को तो नहीं ही मारना....'

इसमें पृथ्वी आदि की हिंसा की सहमति देने का पाप साधु को नहीं लगता, क्योंकि साधुने तो सभी पाप का निषेध ही किया है, पर जब ऐसा शक्य ही नहीं हो, तब ! साधु ने त्रस की हिंसा को छोड़ने पर भार दिया....

ऐसे यहाँ भी साधु ने सभी हिंसा की ना ही कहीं है, लेकिन। जब दो में से एक ही सम्भावित हो तब साधु बोलते है कि, 'वैसे माँ ओर बेटा दोनों पंचेन्द्रिय है; परन्तु माँ विकसित पंचेन्द्रिय हैं। मतलब ! वो ना मरे वो खास देखना....' तो इसमें साधु को बालक की हिंसा की सहमति देने का दोष नहीं लगता....

9. पेट में लड़की :

ये बहुत ही प्रसिद्ध वजह हैं। इसलिए वर्षो से इसका समाधान खुद सरकार और सामाजिक संस्थाए भी देती ही आई हैं....

'बेटी बचाओं' आन्दोलन इसके लिए ही किया जा रहा है, सोनोग्राफी करके 'लड़का है या लड़की,' ये जानने के लिए भी प्रतिबंध रखा गया हैं।

'दीकरी व्हालनो दरियो' सामाजिक कार्यक्रम भी ऐसे ही किसी ध्येय को ध्यान में लेकर चालु किए गए हैं। उन स्त्रीयों को भारपूर्ण प्रेरणा करने में आती है, 'बहन तेरे पेट में लड़की है, इसलिए तू उसे कटवा रही हैं.... ? लेकिन ये क्यों भूल रही है कि तू भी कभी लड़की ही थी ना ? तेरी मम्मी ने तुझे मार दिया होता तो ? आज तेरी बेटी को मारने की बात नहीं आती, क्युकि तू ही इस दुनिया में उपस्थित नहीं होती....

तु खुद एक स्त्री होकर एक स्त्री की हत्या कैसे कर सकती हैं ?'

ज्यादातर नई पीढ़ी की स्त्रीयों में ये सोच कम होती हैं। वो स्त्रीयों का महत्त्व समझती है, और इसलिए, स्त्री होने के कारण स्त्री को मार देने का पाप नहीं करती।

पू. गुरूदेवश्री कहते थे.... **'जहाँ स्त्री की पूजा होती है,**

वहाँ देव निवास करते हैं।'इसका अर्थ ये ही है कि 'जहाँ स्त्री की कत्ल होती हो, वहाँ राक्षस निवास करते है, देव नहीं....'

प्रश्नः लड़की है, इसलिए मार डालना ऐसा हर जगह पर नहीं होता, परन्तु पहले तीन लड़कीया हो और चौथी भी लड़की है, ऐसा पता चले तो गर्भपात करवाना हो सकता हैं। पहले तीनों को तो जन्म दिया ही हैं।

उत्तर : अपने ही साथ क्यों खेल रही हो? मैं आपको पूछ रहा हुँ कि अगर तीन लड़के होते और चौथा भी अगर लड़का होनेवाला हो, तो क्या ऐसा विचार आता कि तीन तो है ही तो चौथे का गर्भपात करवा दें?

प्रश्न : तीन लड़कों के बाद चौथी लड़की की प्राप्ति हो, ऐसी इच्छा थी पर ऐसा नहीं हुआ तो क्या करें.... ?

उत्तर : सही हैं! लेकिन इस से चौथे लड़के का गर्भपात करवाने का निर्णय तो नहीं ही किया ना?

वैसे तीन लड़की होने के बाद चौथे लड़के की इच्छा होती है, ये मंजूर पर चौथा सन्तान लड़की है ऐसा पता चले तो गर्भपात का निर्णय नहीं ही लेना चाहिए। तीन लड़कों के उपर चौथा लड़का, वैसे ही तीन लड़कीयों के उपर चौथी लड़की को अपना लेना चाहिए।

प्रश्न : लड़की होने उसके विवाहदि में खर्चा करना पड़ता है और गरीब लोगों को यह सब परवडता नही है ना? आर्थिक मुश्कीले मतलब गरीबी ये एक अलग ही विषय है और इसकी चर्चा हमने पहले ही कर दी.... इसलिए ये चर्चा फिर से करने का कोई मतलब नहीं हैं।

तीन लड़को के बाद लड़का पसन्द हैं,

तीन लड़कीयों के बाद लड़की नहीं पसन्द हैं।

ये तो सही है, लेकिन लड़की होने के कारण गर्भपात करवाने का विचार कोई भी हिसाब से उचित नहीं हैं।

तीन लड़कीयों के बाद लड़का आये तो गरीबी के कारण गर्भपात करवाने का विचार जरा भी व्याजबी नहीं हैं, हम इसे योग्य नहीं ही मानते....

उपदेशमाला ग्रंथ में एक प्रसंग आता है कि, राजा को 1000 लड़कीयाँ थी लेकिन एक भी लड़का नहीं था। अन्त में अंगवीर नाम का लड़का गर्भ में आया और राजा की मृत्यु हुई। क्या राजा को लड़के की इच्छा नहीं होगी? उसको तो अपने विशाल राज्य के वारसदार के तौर पर लड़के की अपेक्षा तो होती ही हैं।

और ऐसा बोल सकते है कि राजा ने हर सन्तान के जन्म के समय लड़के कि अपेक्षा रखी ही होगी। भगवान से प्रार्थना भी की होगी। मन की स्थिरता भी नहीं रही होगी, फिर भी उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई, तो भी एक भी लड़की का गर्भपात करवाने का विचार उसने नहीं किया।

ऐसी कहानीयों को नजरों के सामने रखकर सभी स्त्रीयों को दृढ़ बनना चाहिए, कि' लड़का या लड़की.... कोई भी हो.... मुझे गर्भपात नहीं करवाना हैं?'

वर्तमान में भी देखने को मिल रहा है कि लड़की को माँ-बाप के प्रति ज्यादा स्नेह होता हैं। स्त्रीयों का स्वभाव प्रकृति से ही लगाव वाला होता हैं।

इसलिए वो शादी के बाद भी माँ-बाप का ध्यान रखना भूलती नहीं हैं।

जब की लड़कों की दुनिया के लिए आज का समय कैसा विचित्र हैं? ये तो सब जानते ही हैं। कैसा आश्चर्य हैं! देखों....

लड़के का माँ-बाप के साथ नहीं बनता, या कम बनता है, सास-ससुर के साथ अच्छा बनता हैं।

लड़की का सास-ससुर के साथ नहीं बनता है, माँ-बाप के साथ अच्छा बनता है इन परिस्थितियों का लाभ लेकर माँ-बाप अपने भविष्य के लिए लड़की को जीवित रखें....

10. जबरदस्ती

माँ की गर्भपात करवाने की इच्छा बिल्कुल नहीं है, फिर भी परिवार में कोई व्यक्ति गर्भपात करवाने के लिए जबरदस्ती करते हैं। ज्यादातर उसके कारण हास्यास्पद होते हैं। देराणी को कहा गया कि 'जेठाणी को भी गर्भ है और तुझे भी मुंबई के छोटे से घर में एक साथ दोनों को संभालना और बड़ा करना सभी तरह से कठिन है.... इसलिए इस बार जेठाणी की बारी, फिर तेरी बारी.... इसलिए गर्भपात करवा दो....'

कैसी विचित्र बात हैं। क्रिकेट मैच आदि में एक-दूसरे का नम्बर आता है, यह बात तो समझ में आती है, पर इसमें तो मात्र मैच नहीं खेलने की ही सजा मिलती है, लेकिन यहाँ तो जिसकी बारी नहीं आई उसे सीधी मौत की सजा मिलती हैं।

लेकिन! ऐसे पागल लोग भी दुनिया मे जीवित हैं....

- पति कहते है कि 'आर्थिक तंगी है,' इसलिए गर्भपात....
- पति कहते है कि 'अभी क्या जल्दी हैं? पहले मौज-शौक, फिर

देखेंगे, ' इसलिए....

जो 13 वजह बताई उसमें से या उसके सिवाय कि कोई भी वजह बताकर माँ को गर्भपात के लिए समझाया जाता हैं। सब लोग एक की एक बात करते है, इसलिए बिना समझी हुई, नासमझ, होकर वो गर्भपात का निर्णय लेती हैं।

कही तो उन्हें डराया, धमकाया जाता हैं। घर से निकाल देने तक की धमकीयाँ दी जाती है, तलाक या उससे आगे बढ़कर जला देने तक की धमकीयाँ कोई परमाधामी के अवतार में आकर दे देते हैं।

और इन सबके सामने अबला की जाती स्त्री का बल भी कितना.... ?

इसका समाधान क्या देना ?

स्त्री का प्रचंड सत्त्व ये ही इसका समाधान हैं,

घनघोर जगंल में सीता दो बालक को जन्म देती है ना, (लव-कुश)....

- दोनों हाथ न होने के बावजुद भी जंगल में अकेली पड़ी हुई **कलावती बालक** को जन्म देती है ना....

- धिक्कार, तिरस्कार को प्राप्त की हुई, जंगल निवासी **अंजना सुन्दरी** हनुमान को जन्म देती है ना....

- दीक्षा से पहले गर्भ था, पति मर गया, दीक्षा ली और उसके बाद भी साध्वीजी ने अपने बच्चे को जन्म दिया ना....

ऐसे इतिहास को नजरों के सामने रख, बहन! दृढ़ संकल्प कर, प्रतिज्ञा कर, कि कोई मुझे गला काटने की धमकी दे या कुछ भी कहे, मैं मेरे पेट के बालक का गर्भपात करवाने का निर्णय नहीं लूंगी। मुझे मेरे बालक को जन्म देने के लिए जो सहन करना पडे उसे अवश्य सहन करूंगी....

और देखो तो सही....

- बहुत प्यास लगने के बावजूद भी **नूतन मुनि** ने पानी के जीवो की रक्षा के लिए अनशन स्वीकार लिया, लेकिन पानी नहीं पीया, और चले गये देवलोक में और आगे जाकर मोक्ष में....

- **मेघरथ राजा** ने कबुतर को बचाने के लिए अपने शरीर में से मांस काटकर कबुतर के वजन के जितना मांस देने के तैयार हुए और शुभभावों के प्रभाव से वो बने शांतिनाथ परमात्मा....

- त्रिशुल के उपर आकाश में शरीर अधर लटक रहा था। ऐसी भंयकर पीड़ा के बीच भी, 'मेरा खुन नदी के पानी में गिर रहा हैं। मैं मरते-मरते भी दूसरे जीवों को मार कर जा रहा हुं, कैसा घोर पापी हुँ मैं ?' ऐसी

पश्चाताप की धारा में चढ़े हुए **अर्णिकापुत्राचार्य** उसी वक्त केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष में पहुँचे....

– परीक्षा करने के लिए देव हाथी बनकर राजमार्ग पर पागलों की तरह भागने लगा। लोग चिल्लाकर भागने लगे, लेकिन रास्ते में चलता हुआ **साधु** एक कदम भी भागे नहीं। देव करीब आया। मुनि को सुंड में उठाकर आकाश में उछाला, लेकिन आकाश से खुल्ली धरती पर गिर रहे मुनि को हाथ–पैर टुट जाने की या मौत की तनिक सी भी चिंता नहीं थी। चिंता सिर्फ इतनी ही थी कि, 'मेरा शरीर धरती पर गिरेगा तो वहाँ जीव होंगे तो वो मेरे निमित्त से मर जायेंगे और इसलिए नीचे देखते रहते हैं। और हाथ में ओघा तैयार ही रखते है पूंजने के लिए।'

देव तो आकाश में से नीचे गिरते हुए मुनि के ऐसे जीवदया के परिणाम को देखकर आश्चर्य–चकित हो गया। अपनी लीला को समाप्त किया। साधु की अनुमोदना करके वापिस चले गये।

बहन! ऐसे तो अनेक दृष्टांत मिलेंगे....

ऐसे उत्तम आत्माओं ने जीवों को बचाने के लिए अपनी जान जोखम में डाली, प्राण की बाजी लगा दी और कुदरत ने उन्हें सुन्दर फल दिया। आपको तो अपने गर्भ के बालक पर जीवदया करनी हैं। एक पंचेन्द्रिय को और उसमें भी एक मनुष्य को बचाना हैं। आगे बात करू तो एक श्रावक को, एक साधु को, एक आचार्य को जीवनदान देना है, क्योंकि **जन्म लिया हुआ ये बालक आचार्य भी बन सकता हैं ना?**

इसलिए बहन! झांसी की रानी बनकर लड़ना ऐसे जोर–जबरदस्ती कारणों के सामने....

आप भी इन जोर जबरदस्ती के सामने जोरदार धमकीया दीजिये।

लेकिन उन हत्यारों, की खुनीयों की बलजबरी को स्वीकार कर, शक्तिहीन बनकर, मिथ्या आँसु बहाकर गर्भपात का निर्णय हर्गीज नहीं लेना।

आपको भविष्य में लाख बार गर्भपात से मरना न पड़े, ऐसा अपना स्वार्थ भी ध्यान में रखना।

11. सुन्दरता को हानि

माँ बनने के बाद शरीर की सुन्दरता कम हो जाती है ऐसी सबकी मान्यता है और ये मान्यता कोई अनुभव के आधार पर ही बनी होगी, लेकिन इन दलीलो में कोई दम नहीं हैं....

सुना है कि जिसके लिए अजायबी जैसे ताजमहल की रचना

की गई, ऐसे बेगम मुमताज के 12 संतान थे।

आज की राजस्थानी पूरानी स्त्रीयों का इतिहास देखोंगे तो 5-7-10 संतानों की माँ बनी हुई हो कुरूप बन गई हो या पति को अप्रिय बनी हो, वैसा सुनने में आता नहीं हैं....

अरे! कितनी जगह पर तो माँ बनने के बाद सौंदर्य ज्यादा खिलता है, ऐसा भी सुनने में आया हैं।

ऐसा भी बनता है कि संतानों की माता बनी हुई स्त्री, पति को ज्यादा प्रिय बनने लगती है क्योंकि उसने पति को संतानों की भेट दी है, और इसलिए यदि सौंदर्य कम हो भी जाये तो पति को सौंदर्य अच्छा ही लगता हैं।

और सौंदर्य बिगड़ने का मतलब शरीर मोटा बने इत्यादि ही है, लेकिन कोढरोग होना, गोरे का काले होना, आँखों से तिरछा दिखने लगना, पतले हो जाना, ऐसा कुछ कभी भी होता नहीं है.... और मान लों कि इतना ज्यादा सौंदर्य बिगड़ जाये, तो भी इतने के लिए कोई अपने सगे बालक की कत्ल करता होगा? ये कैसा घोर अन्याय हैं।

खुद का शरीर मोटा होने से रोकने के लिए अपने बालक को मारनेवाले को क्या उपमा देनी ये आप ही बताईए....

जो कर्म-पाप-पुण्य मानते है वो लोग इतना तो समझ ही ले कि जिस सौंदर्य के लिए आपने ये घोर पाप किया है वो आपको फिर कभी नहीं मिलेगा।

अचानक मुँह पर ऐसिड के छींटे गिरेंगे,

अचानक कोढ होगा रसी टपकेगी,

अचानक पूरे शरीर में बड़े-बड़े छाले होंगे,

अचानक लकवा होने के कारण गरदन मुड जाएगी

जिसके उपर आपको अभिमान था वही किसी निमित्त को लेकर खत्म हो जायेगा, इसलिए ऐसे तुच्छ कारणों की वजह से गर्भपात मत करवाना।

12.मजबूरी

दूसरी शादी करना जरूरी बन गया, इसलिए गर्भपात करवाने की मजबूरी आई। इस कारण के लिए मुझे स्पष्ट करना है कि, 'धीरज रखो, नये बालक के साथ आपको कोई पुरूष नहीं स्वीकारेगा' ऐसी चिंता मन से निकाल दो।'

हाँ! परीक्षा होगी, दो-चार जगह से ना भी आयेगी। पर आपको दृढ़ ही रहना हैं। **मजबूरी आपकी मजबूती को तोड़ ना दे,** इसका ध्यान आपको ही रखना होगा। अंत में इतना तो ध्यान में रखना की

गर्भपात के सामने अनाथ आश्रम का पाप बहुत ही छोटा हैं।

13. क्रोध

पति-सास आदि पर कुछ वजह से आया हुआ गुस्सा उनको परेशान करने के लिए और उनके सामने बदला लेने की भावना से उनकी संतान की इच्छा पूरी न होने देने के लिए गर्भपात करवाया।

ये विचित्र कारण हैं। बहुत कम ही बनता है, लेकिन संसार में कुछ असम्भव नहीं हैं। गुजराती में कहावत है कि, **'पाड़ाना वांके पखाली ने डाम न देवाय** ।इसका अर्थ है कि गुनाह किसी का, और सजा किसी और को.... ऐसा तो नहीं ही होना चाहिए....

आपके पति-सास आदि पर गुस्सा आया तो उनके गुनेह की सजा बिचारे बालक को क्यूँ देनी? गुनाह बालक का नहीं है तो उसे सजा नहीं देनी चाहिए। इतनी सामान्य बुद्धि तो आपके पास होनी ही चाहिए....

वो आतंकवादी भारत के उपर गुस्सा होने के वजह से कश्मीर के निर्दोष प्रजाजनों को मार देते है, तो क्या आपको यह तरीका अच्छा लगता हैं?

तो आप इन आतंकवादीयों के जैसे मत बनना....

14. बलात्कार

बहन! किसी ने आपका बलात्कार किया हो, इसमें आपका कोई दोष नहीं हैं। आप तो निर्दोष हो.... ये मंजुर! फिर भी थोड़े अपयश का सामना करकर बालक को जन्म दो....

प्रश्न : पर इसमें बहन का कोई दोष नहीं तो वो सजा क्यूँ भुगते?

उत्तर : जिस तरह स्त्री निर्दोष है उस तरह वो बालक भी निर्दोष ही है ना? 'ये स्त्री निर्दोष होने के बावजूद भी ये अपराध क्यूं सहन करें....?' वैसे ही आप पूछ रहे हो तो सामने यह प्रश्न आता है कि 'बालक भी निर्दोष होने की वजह से क्यों मौत की सजा सहन करें....?'

अरे! स्त्री की सजा तो छोटी है.... **अपयश** की!

बालक को तो कितनी बड़ी सजा? सीधी **मौत!**

भूल तो आपने की ही नहीं है.... लेकिन अब आप निर्दोष ही हो तो बालक की कत्ल करके दोषी क्यों बनते हो....? निर्दोष ही बने रहो ना! निर्दोषता के साथ बलात्कार सहन किया, अनिच्छा से सहन किया, तो निर्दोषता के साथ अपयश भी सहन कर लो, बालक के हित के लिए!

15. बालक रोगी या मंदबुद्धि जन्मे

एक जैन परिवार ने विचित्र रोगवाले सन्तान को जन्म दिया। आठ-दस वर्षो में ही उसके मरने की संभावना थी। परिवार ने भारत भर के तमाम तीर्थस्थानों की यात्रा करवाई, प्रभु पूजा करवाई, और जब मेरे गुरूदेवश्री के पास आये तब कहते है कि, 'म.सा. पहेले तो डॉ. और दूसरे लोगों की सलाह से गर्भपात ही करवानेवाले थे, फिर सद्बुद्धि जगी कि, 'आनेवाली आत्मा कोई पुण्योदय लेकर ही आई होगी। जिसके कारण उसे जैन कुल प्राप्त हुआ, पर उसका पुण्य कम होगा इसलिए वह रोगी अल्पायुष्य वाला जन्मा है.... तो उसके माँ-बाप के तौर पर हमारी जिम्मेदारी है कि उसके आनेवाले भव के लिए बड़ा पुण्य का भाता बांधकर उसे दे, जिससे उसे जैन कुल + निरोगीता + बडा आयुष्य आदि सभी चीजे प्राप्त हो।''

इसलिए उसे जन्म दिया....

भारत के महान तीर्थो कि यात्रा + पूजा करवाई.... बड़े-बड़े आचार्य भगवन्तों के दर्शन-वन्दन आशीष प्राप्त करवाए। अब वह भले ही हमारे घर से विदाई ले, पर आने वाले भव में उसे कुछ कम नहीं मिलेगा।

म.सा. ! हमने ये बराबर किया ना ?

पू. गुरूदेवश्री गद्गद् हो गये, उनकी भावना सुनकर....

सुरत-कैलाशनगर-शंखेश्वर कोम्पलेक्स में मुकुट चढ़ाने का लाभ वहा सागर के मंथन अर्पाटमेन्ट में रहने वाले किसी परिवार ने लिया(मुकुट का सम्पूर्ण खर्च उस परिवार का हैं।) उस निमित्त से वहाँ पगले किये, और मांगलिक प्रवचन दे रहा था, तब वहाँ एक लड़की की रोने की आवाज आई। प्रवचन में विघ्न टालने के लिए लड़की को उठाकर अन्दर ले गये.... प्रवचन के बाद अन्त में उसकी मम्मी उसे ले आई, ''म.सा. ! इसे वासक्षेप कीजिए ना।'' मैंने देखा की लड़की का शरीर छोटा था, माँ उठाकर चले इतना। पर मुखाकृति से उसकी उमर छोटी नहीं दिखी, और वो मंदबुद्धि जैसी लगी।

मेरे मन के भावों को जानकर माँ ने कहा कि, 'म.सा. ! इसकी उम्र 9 वर्ष है- मंदबुद्धि तो क्या, पर मन है ही नहीं, ऐसा कहे तो चले। इसे लकवा भी है, ये किसी को पहचानती नहीं। मुँह पर खुशी भी नहीं.... मन्दबुद्धि वालों को ये सब तो होता ही हैं।'

''तो आपने 9 वर्ष तक उसे कैसे सम्भाला.... ?''

''भोग देकर.... और सिर्फ मैंने ही नहीं पूरे परिवार ने भी भोग देकर संभाला है, मेरे सास-देवर-जेठ-जेठानी आदि सदस्यो ने समय से लेकर सभी बातो में भोग दिया हैं....''

कभी वेकेशन में बाहर जाने का हो, तब पहले मैं कहती कि, 'आप जाओं, मैं इसे सम्भालुंगी.... लेकिन? सभी की एक ही इच्छा कि, सभी साथ जायेंगे, और बेटी को भी साथ में लेकर जायेंगे उसकी। अनुकूलता के अनुसार ही सारे प्रोग्राम फिक्स करेंगे।'

और इस तरह से 9 वर्ष बीत गये। ये कितना जीयेगी यह तो मालूम नहीं.... लेकिन ये हमें कभी भाररूप नहीं लगी, ना लगेगी....

वो पूरा परिवार तब भावुक बन गया था। तब मुझे जल्दी होने से मैंने पूरे परिवार को बालिका के साथ उपाश्रय बुलाया और दोपहर को विस्तार से सारी बातें सुनी....

'ये मर जाये तो हम फ्री हो जायेंगे, ऐसा विचार किसी को नहीं आता....' मैंने घबराहट के साथ पूछा था।

पवित्रता से भरे हुये शब्दों में जवाब मिला.... 'कभी नहीं....'

और फिर बराबर तीन महीने बाद बारडोली चातुर्मास में समाचार मिले कि 'अवनी बहन की लड़की स्वर्गवासी हुई....'

– मुंबई के मनीषभाई चमनभाई को तीसरी लड़की हुई। हार्ट प्रोब्लम, और उसके लिए कई ऑपरेशन करवाये, बहुत प्रयत्न किये। बेटी बच नहीं पाई.... लेकिन उस परिवार ने पहले 2 बेटी होने के बाद भी तीसरी बेटी का गर्भपात करने का सोचा भी नहीं.... ऐसे तो सैकड़ो परिवार होंगे.... जो इस धरती के देव है.... तो सामने हजारों परिवारों ने दानव राक्षस–दैत्यों के योग्य कार्य भी कम नहीं किये....

आपको क्या बनना हैं ? ये तो आप ही सोचीये, बाकी पाप करने के लिए बहाने तो बहुत मिलेंगे ही। पुण्य करने के कारणों को तो आपको ढूँढ़ना पड़ेगा ही, खड़ा करना पड़ेगा ही....

16. माता को रोग होने की सम्भावना

क्या जवाब देना ? बहुत कह ही दिया है। आपके रोग की मात्र सम्भावना को नजरों के सामने रखकर, बिचारे बालक को यमराज का मेहमान बना देना, ये कहा का न्याय हैं ?

17. माता को रोग होने की वजह से बालक को रोग की सम्भावना

इसमें ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है....,

लेकिन ! एक बात समझने की जरूरत है कि,

डॉ. कोई भगवान नहीं हैं। **कर्मो की, धर्म की दुनिया.... इस दुनिया के तमाम स्वरूप को बदलने की ताकत रखते है....**

जीवदया के, पापभीरूता के पवित्र भावों के साथ गर्भपात नहीं करवाने रूप किया हुआ धर्म, डॉ. को बातों की गलत साबित कर देगा। विज्ञान के नियमों को भी गलत साबित करेगा.... और ऐसा कुछ ना भी हो तो भी आपका निर्णय आपकी आत्मा की उन्नत्ति में अवश्य कारण बनेगा ही....

इस तरह सामान्य से गर्भपात के 7 कारणों का मेरे क्षयोपशम से हो सके उतना समाधान दिया हैं। बाकी तो, सीधी बात यह है की हरेक व्यक्ति एक प्रतिज्ञा ले कि मैं गर्भपात नहीं ही करवाऊंगी न करूंगी। किसी को भी ऐसे पाप की सलाह भी नहीं दुंगी। सहमती भी नहीं दूंगा। ऐसा एक संकल्प, भीष्म के जैसी प्रतिज्ञा, पालन करने की दृढ़ता, जीवदया का कोमल परिणाम, कैसी भी परिस्थिति के सामने लड़ने की पूरी तैयारी.... ये सब होगा तो, सिर्फ जैनों में ही नहीं, पूरी दुनिया में से गर्भपात के पाप का नाश हो जायेगा।

प्रभु सबको **सन्मति** दे,

प्रभु सबको **सत्क्रिया** दे,

बस! इतनी ही प्रभु से छोटी **प्रार्थना....**

3. गर्भपात कितना बड़ा पाप हैं?

मेरे पू. पा. गुरूदेवश्री चन्द्रशेखरविजयजी म.सा. के मुँह से ऐसा सुना हुआ है कि, 'जो स्त्री गर्भपात करवाती है उसे 180 उपवास का प्रायश्चित आता हैं।' मतलब कि वे इतना प्रायश्चित देते नहीं थे, क्योंकि करनेवालो कि इतनी शक्ति कहाँ! लेकिन वो शुद्ध प्रायश्चित देने के आग्रह वाले थे, ये बात तो पक्की ही हैं।

"मुक चीख" नामकी एक सी.डी. उस वक्त मिलती थी, जिसमें गर्भ से रहा हुआ जीव कितनी पीड़ा के साथ मरता है, वो बताने का प्रयास किया गया था। आया हुआ वो बालक पीड़ा होने के बावजूद भी चिल्ला नहीं सकता, क्योंकि उसकी अवस्था ही ऐसी है, इसलिए उस सीडी का नाम(मुक चीख) रखा गया था।

गुरूदेव के मुँह से जैसा सुना था वैसा बताऊ तो,

1. या तो, **घातक एसिड** की गोलियों के द्वारा गर्भ को खत्म किया जाता है,
2. या फिर, **मशीन** के उपयोग से गर्भ को खत्म किया जाता हैं....

जैसे किसी के शरीर पे गरमा-गरम पानी गिरे, तेल गिरे, तो उसके शरीर की चमड़ी जल जाये, पिघल जाये, और आसानी से हाथ में आ जाये।

बस ! उसी तरह बार-बार पानी-तेल-ऐसिड उस शरीर पर डाले जाये तो क्या हालत होगी उस शरीर की ? यही कि वो सम्पूर्णतया पिघल जायेगा....

ऐसिड जैसी दवाईया उस गर्भ पर ऐसी ही असर करती है,

अरे ! नौ महीने के बाद जन्मा हुआ बालक कितना कोमल होता है, वो सभी लोग देखते ही है समझते ही हैं ? उस बिचारे के उपर बार-बार ऐसिड डाला जाये तो उसकी हालत क्या होगी ?

धीरे-धीरे वो पिघल जायेगा, मल के द्वार से बाहर निकल जायेगा। माँ को शान्ति का अनुभव होगा, लेकिन उस बालक की भयानक वेदना का अंदाजा उस माँ को कैसे होगा ?

ऐसिड वाली दवाईया लेनेवाली सभी माँ को एक प्रेरणा है कि,

1. आप एक बार ये सीडी देख लेना....

2. सच बोलनेवाले डॉ. को या किसी जानकार व्यक्ति को पूछना कि, 'ये गोली लेने के बाद अंदर क्या प्रक्रिया होती है ? यानि कि दवाई के द्वारा पूरा गर्भ पिघल जाता है....' लेकिन ! वो कैसे पिघलता हैं ? वो आप मुझे बताईए।

शायद ! इंटरनेट पर सर्च करके आप ये जानकारी प्राप्त कर सकते है, और प्राप्त कर ही लेना, बराबर जान ही लेना.... मुझे पक्का विश्वास है कि सीडी देखने के बाद ये सब जानने के बाद आप अपना निर्णय जरूर बदल देंगे....

3. ये सब जानने के बावजुद भी यदि दवाई लेने की इच्छा हो तो, सिर्फ एक प्रयोग करना.... जिस तेल में आपने पुडी तली हो उस तेल को पूजा करने की कटोरी में भरकर आपके पैर की या हाथ की चमड़ी पर गिरा देना , घबराये बिना डाल देना.... ऐसे तो सिर पर या मुँह पर गिराना ही उचित है, लेकिन मैं आपके जितना निष्ठुर नहीं ही बन सकता, इसलिए ऐसा नहीं कहा....

आप जैसे आपके संतान को ऐसिड से जलाकर, खतम करकर उसकी जिंदगी बरबाद करने के लिए तैयार हो जाते हो, वैसे ही मैं आपकी जिंदगी बरबाद करने के लिए हर्गीज तैयार नहीं हुँ, क्योंकी ! आप तो मेरी सगी बहन के स्थान पर हो।

वैसे तो गर्भ भी आपके सगे सन्तान के स्थान पर है, इसलिए आप भी उसकी जिंदगी बरबाद नहीं ही कर सकते। फिर भी माता आज डायन बनने के लिए तैयार हो जाती है, पर ये भाई आपके लिए आपको मारनेवाला राक्षस बनने के लिए तैयार नहीं हैं। इसलिए ही वो गरमा-गरम तेल को आपके सिर-मुँह पर डालने के लिए नहीं कहकर हथेली या पैर पर डालने

के लिए कह रहा है, और ये भी आपकी आँखे खोलने के लिए, आपको सत्य से परिचित करवाने के लिए....

ये अनुभव करने के बाद थोड़ा सोचना कि आप आपके बालक के शरीर पर ऐसा ही दवाई रूप में ऐसिड डालनेवाले हो, वो भी बारबार..... तो उसका क्या होगा? उसके बाद आपको निर्णय लेना है, वैसे भी आपको रोकने की ताकत दूसरे किसी के पास नहीं है सिवाय कि आपकी सद्बुद्धि....

अरे बहन! काम करते हुए कभी गरम-गरम तेल का छांटा भी हथेली पर गिर जाता है, तो शायद आप चिल्लाते हो या दवाई लगाने पहुँच जाते हो, तो पूजा की कटोरी जितना गरमागरम तेल का आप अनुभव करो तो आपकी क्या हालत होगी? ये आप ही सोचना....

अभी मशीन की बात....

पू. गुरूदेवश्री के पास सुना है कि, पीछे के भाग से गर्भ तक मशीन का प्रवेश करवाया जाता है, और मशीन चालु की जाती है, मशीन के उपर जो तीक्ष्ण धार होती है वो घुमने लगती है, और उल्टे सिर लटके हुए बालक का सिर धीरे-धीरे चूर्ण रूप होने लगता है, यानि कि मशीन सिर के उपर घुमती है और सिर का भाग बारीक चूर्ण रूप बनकर मशीन के द्वारा पीछे के भाग से बाहर निकल जाता हैं....

इस तरह पूरा का पूरा सिर चूर्ण बनकर बाहर निकाल जाता है, फिर बाकी के तमाम अंग इस पद्धति से बाहर आ जाते हैं। गर्भ संपूर्ण खत्म हो जाता है और माता को परम शांति होती हैं।

आपने मिक्सर तो देखा ही होगा?

अंदर नारियल डालो, चालु करो और नारियल का चुर्ण हो जाता है ना? और वैसे ही दूसरी सारी चीजों का भी चूर्ण हो जाता है ना?

उस मिक्सर में होनेवाले चूर्ण से अधिक पतला-बारीक भूक्का मशीन के द्वारा शरीर का होता है, और बालक मर जाता हैं।

मशीन के द्वारा गर्भपात कराने वालों लोगों को फिर से मेरी एक प्रेरणा....

1. वो सीडी देख लीजिये,
2. सत्य बोलने वाले डॉ. के पास इसकी सच्चाई जान लीजिये,
3. एक प्रयोग करना। चाकू लेकर हाथ-पैर की चमड़ी काट देना, शक्ति बढ़ाकर मांस का छोटा टुकड़ा काट देना, सत्त्व को इकट्ठा करके एक सूई लेकर हाथ या पैर के उपर 200-500 बार जोर से

चुभाना....

यदि अगर! ऐसा लगता है कि इसमें कोई तकलीफ नहीं है, इसमें तो मजा आ रहा है.... तो आप आजाद!

पर अगर आवाज निकले, दर्द होता हो या ऐसा करने की हिम्मत ना हो,

अरे! ये पढ़ते समय भी यदि शरीर काँपने लगे 'म.सा. को लिखने का भान नहीं है.... ऐसी भाषा लिखी जाती होगी?' ऐसा चिंतन चालु हो जाये और इसके द्वारा स्वयं को निर्दोष साबित करने की इच्छा हो.... तो शांति से सोचना कि, उस गर्भ की क्या हालात होती होगी? और फिर चुपचाप गर्भपात का निर्णय, दृढ़ता के साथ बदल देना....

मुझे ये 2 बातें सूने हुए 15 साल हो गये। आधुनिक विज्ञान ने उस गर्भ को पीड़ा न हो। उस तरीके से उसे मार देने के बहुत नये उपाय भी करूणा भाव से प्रेरणा को प्राप्त करके ढूढ़े ही होंगे.... पर मौत तो मौत ही हैं। मौत की पूर्वभूमिका में पीड़ा होने में शायद बदलाव जरूर हुए होंगे.... पर वैसे ही जब कोई आपको कहे 'आपको बेहोश करके उस दशा में जहर का इंजेक्शन देकर मार दे... तो आप तैयार हो....? आप को पता भी नहीं चलेगा....।' तो भी आप ना ही कहोंगे ना? क्यूँकि आपको जीना हैं?

वैसे ही उस बालक को भी जीना है, तो आप उसे पीड़ावाली-पीडाहीन कोई भी प्रकार की मृत्यु कैसे दे सकते हो....?

अरे! मरने की इच्छावाले को भी मार दो तो वो भी खून ही है, तो जिसको मरने की इच्छा नहीं है, उसे मारने में तो 100 प्रतिशत खून ही कहाँ जायेगा।

आप कैसे 'गर्भपात' जैसा अच्छा नाम देकर उस पाप को अनिवार्य कर्त्तव्य रूप साबित कर सकते हो....

आतंकवादी जैसे दूसरे लोगों को परेशान करकर मारते है, वो उनकी बेरहमी हैं। वैसे ही बालक को गर्भ में मार देना ये आतंकवादी जैसा ही पाप हैं। फर्क सिर्फ इतना ही है कि, बालक अंदर है इसलिए दिखता नहीं, इससे वास्तविकता में तो बदलाव नहीं ही आता ना?

बहन! गर्भपात ये कैसा पाप हैं? ये आप उपर के विवेचन से समझ ही गये होंग

4. गर्भपात की कतिपय सत्य घटनाएँ

1. डॉ. ने कहा कि, 'दो में से एक को ही बचने की सम्भावना हैं।'

पति ने कहा कि 'पत्नी को बचाओ।' भाग्योदय से दोनों बच गये, बेटा बड़ा हुआ। दीक्षा ली।

कौन है, आप जानते हो ?

हमारे समुदाय के लगभग 630 साधुओं में !अच्छे बहुश्रुत, कठिनतम ग्रंथों के उपर बहुत सी टीकाए लिखने वाले, सरस्वती पुत्र, वर्धमान तपोनिधि पू. आ. **यशोविजयसूरिजी म.सा!**

पीछे से तो उनके मम्मी-पापा-भाई आदि सबने दीक्षा ली....

2. एक साध्वीजी अहमदाबाद के एक संघ में पहुँचे, 25 साल के परिचित बहन वन्दन करने आये.... थोड़े जल्दी में थे। पूछताछ करने पर मालूम पड़ा कि, वो गर्भपात करवाने जा रहे थे। घर पर पहले 2 बालक हो गये थे....

साध्वीजी आश्चर्यचकित हो गये। 'बहन! आप वो दिन भूल गये.... ? कि आप दीक्षा लेने के लिए परिवार के साथ झगड़े थे, किसी को बोले बिना आप भाग गये थे, पर परिवार के सामने आपका कुछ चला नहीं और रोती हुई आँखों के साथ आपने शादी कर ली....

छोटे से छोटे जीव को भी ना मारने की तीव्र भावना रखनेवाली आप आज अपने गर्भ में रहे हुए बालक की हत्या करने जा रहे हो? शरम नहीं आती आपको?' भूतकाल याद आते ही वो बहन रो पड़े। संयम की उनकी वो भावना ने उनको अपना निर्णय बदलने पर मजबुर कर दिया.... और उन्होंने संकल्प लिया। कुछ रकम भर दी थी, गर्भपात फिक्स हो गया था, सब रद्द कर दिया और राजकुमारी नहीं लेकिन देवांगना जैसी लड़की को जन्म दिया।

आज वो बहन अत्यंत खुश हैं, अपनी बेटी को दीक्षा देने की तीव्र भावना है, उस बेटी को अभी तक पता नहीं कि मौत के मुँह में से मुझे बचानेवाले जिनशासन के एक साध्वीजी थे। वो बहन का नाम तो नहीं लिख रहा लेकिन! साध्वीजी का नाम लिख रहा हुँ....

(सा. धर्मरेखा श्री जी पू. आ. गुणरत्नसूरी समुदाय के)

3. सुरत-मुंबई के बीच एक छोटे से शहर में परिवार ने गरीबी के कारण गर्भपात का निर्णय ले लिया। लेकिन! उन दिनों में पू. गुरूदेवश्री उस शहर में पहुँचे, उनके हृदयस्पर्शी प्रवचन में गर्भपात की भयानकता को सुनकर माँ-बाप ने निर्णय बदल दिया, और लड़के को जन्म

दिया....

35-40 वर्ष बीत गये उस बात को !

2 वर्ष पहले ही वो भाई मुझे मिले !

पू.गुरूदेवश्री का नाम लेने के साथ ही आँखों में से अश्रुधारा बहती हैं। अनुमोदना करते थकते नहीं....

'म.सा. ! लड़का मस्ती से जी रहा है, अब तो आर्थिक स्थिति भी अच्छी हैं। एक दुकान संभाल रहा है, और अभी तक उसे पता नहीं कि हम उसके माँ-बाप उसे मार देने वाले हो....' उस भाई की प्रसन्नता फोटो में कैद करने जैसी मनमोहक थी....

4. एक बहन कहती है, 'म.सा. ! तीन बेटे और दो बेटिया हैं। उसमें से दो बेटों ने और एक बेटी ने दीक्षा ली है, मैंने छट्ठे गर्भ को मार दिया, आज मुझे ऐसा विचार आता है कि, 'अगर उसने जन्म लिया होता तो उसके भाई-बहनों के पीछे उसने भी दीक्षा ले ली होती। पर म.सा., मुझे इसलिए ज्यादा पश्चाताप होता है, कि मैंने गर्भ में एक बालक को ही नहीं परन्तु एक साधु या साध्वी को मार दिया हैं। यानि कि एक साधु की हत्या का ही घोर पाप किया है....''

5. चेन्नई साहुकारपेट में रहते हुए उत्तम श्रावक सत्यविजय !(उनका नाम साधु जैसा है लेकिन वो एक श्रावक है) उन्होंने अपने नाम के साथ अपना प्रसंग देने की सम्मति दी हैं। उन दिनों में पेट भरने की भी परिवार में दिक्कत थी। पत्नी ने कहा कि 'गर्भपात करा देते हैं।'

सत्यविजय सत्यवक्ता बने। 'आनेवाला अपना भाग्य साथ में लेकर ही आता हैं। हम उसका पोषण करनेवाले कौन हैं ? जो होना होगा, वो हो जायेगा, पर संतान को जन्म देना ही हैं।' और सन्तान का जन्म हुआ और उसमें भी बेटी हुई, पर वो लक्ष्मी बनकर आयी। उसके आने के बाद सत्यविजय ने बहुत पैसे कमाये, सब कर्ज तो उतार ही दिया साथ ही साथ अपनी खुद का कारोबार भी खड़ा किया।

अब वो बेटी बड़ी हो गई, **सी.ए.** हैं। जॉब कर रही हैं। वर्ष में 10 लाख कमाती हैं।

परिवार की धार्मिकता को देखो,

सत्यविजय अंजनशलाका आदि कार्यक्रमों में विधिकारक के तौर पर जाते है, पर एक भी पैसे लेते नहीं हैं। किसी को ऐसा न लगे कि उनके पास पैसों की कमी है, इसलिए 5-6 अँगुठी+ मोटी सोने की चैन आदि महंगी

चीजे पहनकर जाते हैं। रात्रिभोजन त्यागादि ये तो उनके जीवन में सामान्य धर्मकार्य हैं,....

उनकी बेटी भी बहुत धार्मिक हैं। चौमासे में 50 दिन तक रात को नहीं ही खाने का, बड़ी कम्पनी में जॉब होने के बाद भी घर से टिफिन लेकर जाने का और सुर्यास्त से पहले खा लेने की टेक रखती हैं। घर से गरम पानी लेकर जाना आदि आप उनको रूबरू या फोन से मिलना चाहते हो अन्य भी तो आपका सम्पर्क जरूर करवाएगें धार्मिकता जीवनम् गुथीत हैं।

6. गर्भ को ज्यादा **Negative घटनाएँ** होने के कारण गर्भपात करवाना संभव नहीं था, कानुनी गुनाह था, परन्तु किसी कारण से माँ ने जिद्द पकड़ी। डॉ. ने पैसे खाकर गर्भपात करने का प्रयत्न किया। लेकिन बालक मरा नहीं, जन्म तो प्राप्त किया, लेकिन दवाईयों के विपरीत असर के कारण स्वरूप विकृत हो गया था। उसको जिंदा रखना डॉ. को उचित नहीं लगा। माँ ने भी सहमति दे दी। निर्दयी डॉ. ने उसे मार दिया और खिड़की में से गटर में डाल दिया, नहीं तो पोलिस केस आदि का डर रहता।

7. हम कल्पना भी नहीं कर सकते, ऐसी क्रुरता चारों तरफ फैली हुई हैं। अभी ही ऐसा सुनने में आया कि **चीन** में थाड़े लोगों को इन्सानो का और उसके गर्भस्थ बालक का मान्स बहुत प्रिय है इसलिए वो लोग रूस से बालकों को इम्पोर्ट करते हैं।

भौतिक सुखों के पीछे पागल बनी हुई कितनी ही स्त्रीयाँ गर्भ धारण करती हैं। चार-पाँच महीनों के बाद ऑपरेशन के द्वारा बालक को बाहर निकालकर उन बालको को चीन भेजा जाता हैं। ये बात तो मैंने सुनी हुई हैं। लेकिन एक लाइव फोटो तो मैंने अपनी नजरों से देखा है, जिसमें एक पुरूष एक छोटे से बालक के छोटे से हाथ को खा रहा था....

इन सब कारणों से, धन्धे के लिए गर्भपात हो, ये कैसा घोर पाप!

प्रसंगों का अंत ही नहीं है....

इसमें मैंने अच्छे प्रसंग ज्यादा बताये हैं। जिसमें गर्भपात होता नहीं है पर होने वाला था, और रूक गया और उसके बहुत फायदे भी हुए।

ये पढ़कर आप भी पॉजिटिव निर्णय ले, ऐसी ही एक भावना....

ABORTION :
A TEN MINUTE PROCEDURE
YOU HAVE THE REST OF YOUR
LIFE TO REGRET

5. गर्भपात के नुकसान क्या ?

नुकसान 2 प्रकार के,

(1) इस लोक के (2) परलोक के....

पहले इसलोक के नुकसान देखते हैं।

(1) दवाई की या मशीन की साइड इफेक्ट हो तो पूरी जिंदगी के लिए सन्तान प्राप्ति में मुश्किल हो जाती हैं। फिर रोने + पछतावा करने का समय आता हैं।

(2) ऐसी हिंसा करनेवाले का पुण्य ज्यादातर खत्म हो जाता हैं, और शारीरिक रोग भी होते हैं। यानि कि शरीर में कोई ना कोई छोटी-बड़ी तकलीफ होती ही रहती हैं। उसमें भी दवाईयाँ लेने वाली स्त्रीयों को ज्यादातर कैन्सर, जलन आदि होने की सम्भावना तो पक्की ही रहती हैं। कभी-कभी जलकर मरना भी पड़े वैसी परिस्थिति सर्जित होती हैं।

(3) मशीन से गर्भपात करवाने वाले को अकस्मातादि होने की सम्भावना तो है ही। क्यूँकि कर्म विचित्र है, आज जैसा करते हो, वैसा फल मिलता हैं।

(4) जो बाहर पता चले, तो समाज में निंदा-टीका होगी ही। अरे! 'गर्भपात क्यों कराया होगा ?' उसमें अलग-अलग कारणों की कल्पना भी लोग कर बैठते हैं। स्त्री के चरित्र पर भी आरोप आ सकता हैं।

(5) ऐसी घोर हिंसा करनेवाले ज्यादातर आर्थिक स्थिति से कंगाल हो जाते हैं। पैसे खत्म हो जाते है, प्रतिष्ठा खत्म हो जाती हैं। बिन सोची आपत्ति का सामना भी उसे करना पड़ता हैं। ये सिर्फ कल्पना नहीं हैं। लेकिन वास्तविकता है....

(6) यदि वो मरनेवाला बालक व्यन्तर-वाणव्यन्तर जैसे हल्की जाति का देव बने तो पूरे परिवार से बदला लेगा.... नींद में डरावने सपने भी दिखाता है, किसी के शरीर में प्रवेश कर जाये, ऐसा तो कुछ ना कुछ उल्टा-सीधा उस देव के गुस्से की वजह से होता ही रहता हैं।

ज्यादा तो क्या कहना ?

जिन्होंने गर्भपात करवा लिया हो ऐसे लोगों की जिन्दगी पर नजर करो तो, वो सुखी हो ऐसी सम्भावना तो नहीं हैं। बिचारे आत्महत्या कर बैठे, इस हद की परेशानी उनके जीवन में आएँ, उसमें कोई आश्चर्य नहीं....

अभी **परलोक** के नुकसानों को देखते हैं।

(1) शारीरिक कोई खराबी न हो तो भी सन्तान की प्राप्ति न हो।

(2) शायद गर्भ रह भी जाय, तो भी सारी सन्ताने मरी हुई जन्मे।

आपको आश्चर्य होगा, चेन्नई में एक जैन बहन ने 6 बार गर्भ धारण किया, लेकिन या तो गर्भ अन्दर ही खत्म हो जाता या मरा हुआ ही जन्मता, या जिंदा जन्म होने के बाद तुरन्त मर जाता।

(3) गर्भपात करवाने वाले आनेवाले भवो में खुद ही गर्भपात का भोग बनते है, यानि कि उनकी मम्मी उन्हें मार डालती है, जैसे इस भव में उन्होंने अपने सन्तान को मारा....

(4) नरक-तिर्यंच की सम्भावना पक्की..... क्योंकि पंचेन्द्रिय हत्या घोर पाप हैं....

(5) गरीबी, कुरूपता, धिक्कारपात्रता, अप्रियता आदि अनेक मानसिक परेशानी खड़ी करनेवाले दूषण परभव में अवश्य होते हैं।

ये तो सिर्फ बिन्दु बताया, सिन्धु आप ही समझ लेना....

आप वर्तमान में देखिये,

(1) सन्तान प्राप्ति के लिए तड़पते दम्पतियों को तो आप **देख सकते है ना ?**

(2) मरे बालक को जन्म देने वाले को आप **देख सकते है ना ?**

(3) सन्तान होते हुए भी सन्तानों के हाथ की मार खाने वाले माँ-बाप को आप **देख सकते है ना ?**

(4) सन्तानों की गालियाँ खाने वालों को आप **देख सकते है ना ?**

(5) हर्पिस रोग की वजह से पूरे शरीर में जलन होती हो, ऐसे भी लोग आपको **देखने मिलते है ना ?**

दुनिया में दिख रही ऐसी अनेक विषमताओं के पीछे कारण उन्होंने पूर्वभव में करवाया हुआ गर्भपात भी हो सकता है.... ये मत **भूलना।**

नुकसान से घबराया हुआ इन्सान पापकार्य से रूके ये सम्भावना पक्की है, जैसे फाँसी आदि सजा से घबराया हुआ इन्सान हिंसादि गुनाहो से बचता है.... वैसे !

6.गर्भपात करवा दिया हो तो क्या करना?

ये पुस्तक पढ़ने से पहले ही जिन्दगी में एकबार पहले गर्भपात करवा लिया हो तो अब क्या करोंगे? आपको सचमुच डर तो लगेगा ही कि, 'मैंने यह घोर पाप कर दिया हैं। अब मेरी क्या हालत होगी?' परन्तु **''रोग हो तो मौत ही होती है....''** ऐसा नियम नहीं हैं। यदि दवाई बराबर की जाये और रोग फैला हुआ न हो तो रोग मिट सकता हैं। और मौत को पीछे धकेला जा सकता हैं।

वैसे तो जिसने गर्भपात करवा लिया है उन्होंने भयकर पाप बांध लिया है, लेकिन उसका निवाराण किया जा सकता हैं।

वो इस तरह से-

(1) **Remorse (पश्चाताप):** ये पुस्तक पढ़कर या दूसरी तरह से भी घोर पश्चाताप कर सकते है कि, 'अररे! मैंने ये क्या किया?'

(2) **Confession(प्रायश्चित)** उसके बाद शरम की वजह से गुरू को पाप न कहे, छुपाये तो यह गलत ही हैं। इसलिए दूसरा क्रम यह कि खुद का पाप छुपाए बिना सद्गुरू को कह देना। गर्भपात का जैसा भी कारण हो वो सद्गुरू को कह देना चाहिए। कितने ही बाद, किसके पास, कैसे, कौन से भाव से गर्भपात करवाया, सब कह देना चाहिए।

- एक भी बात छुपानी नहीं....

- शास्त्रज्ञाता, अच्छे, आचारपालन करनेवाले महात्मा को ही कहना। लिखकर या बोलकर कहना।

- एक व्यक्ति को साथ लेके जाना, साधु के पास अकेले नहीं जाना। भले ही दूसरा व्यक्ति वहाँ दूर ही बैठे।

(3) **Forfeit(संपूर्ण ∑रण)** आप आलोचना करोगे तो गुरू आपको प्रायश्चित के रूप में उपवास आदि देंगे। इसका प्रायश्चित आदि सब बराबर करना, समय से पूरा करना।

प्रायश्चित के बारे में खास सूचनाएँ....

- गुरू जो प्रायश्चित दे उसे स्वीकारने की तैयारी रखनी चाहिए।'मुझसे उपवास नहीं होता, रात्रि भोजन त्याग नहीं होगा' ऐसे कोई भी बहाने मत निकालो। ऐसा घोर पाप करने के बाद प्रायश्चित करने में ऐसा बचाव क्यों?

कैन्सर वाले किमो लेते है, उससे पूरे शरीर में जलन होती है, सिर के सारे बाल निकल जाते है, फिर भी वो किमो लेते हैं। यदि एक भव

सम्बन्धी रोग को दूर करने के लिए इतनी दुखदायक भी चिकित्सा करवाने की तैयारी हो, तो गर्भपात का पाप तो अनन्त भवों में भटकाने वाला हैं। उसको खत्म करने के लिए उपवास आदि तप करने की ना क्यों कहना.... ? बहाने क्यूँ....

आप बचाव करोंगे तो गुरू तो करूणा कर भी देंगे, लेकिन वो तो आपको नुकसान ही करेगा।

वो पाप खत्म नहीं होगा ।

इसलिए सामने से कहना चाहिए कि, 'गुरूदेव! मेरी दया मत खाओ, मैं खूनी हुँ। मुझे कड़क से कड़क प्रायश्चित दीजिये, मौत तक का प्रायश्चित भी मुझे मंजुर हैं।'

– प्रायश्चित के लिए उत्साह बताया, लेकिन मिले हुए प्रायश्चित को पूरा करने के लिए भी ऐसा ही उत्साह रखना चाहिए। पीछे से प्रमाद–आलस आये और गुरू ने दिये हुए समय के दौरान प्रायश्चित पूरा न हो तो सके तो वह नहीं चलता।

अत्यन्त अनिवार्य कारण से प्रायश्चित पूरा नहीं ही होगा, ऐसा लगे तो पहले से ही गुरू की सहमति ले लेनी चाहिए। गुरू को पूछे बिना कुछ भी करना नहीं। संभव होगा तो गुरू प्रायश्चित को बदलकर समय से प्रायश्चित पूरा करवा देंगे।

(4) **Oath** भविष्य में ये पाप नहीं ही करूँगी, ऐसा दृढ़ संकल्प–प्रतिज्ञा इसका नाम अकरणनियम हैं। रोग की दवाई लेने के बाद भी रोग के कारण चालु ही हो तो रोग को कैसे मिटाया जाये.... ? सूंठ लेने के बावजुद दही–श्रीखंड चालु ही हो तो सर्दी कैसे मिटेगी.... ?

वैसे पाप रूपी रोग की दवाई प्रायश्चित कर लेने के बाद भी गर्भपात रूपी पाप क्रिया चालु ही हो तो, दूसरी बार हो जाये तो अशातादि पापकर्म रूपी रोग कैसे खत्म होंगे ?

और ये पाप छोड़ना आसान भी हैं। ये कोई व्यसन रूपी पाप नहीं हैं।

जिससे गर्भपात हो गया हो तो वो अपनी आत्मा को बचाने के लिए ये चार चीजे अवश्य करें।

1. पश्चाताप 2. आलोचना 3. प्रायश्चित 4. अकरणनियम।

इसके अलावा कितनी नई बाते, प्रायश्चित के बाद करने जैसी बाते, यदि सही लगे तो जरूर करनी। आपके पाप को धोने के लिए ये बातें भी अत्यन्त उपयोगी बनेगी।

(1) अनाथ आश्रम के बच्चों को सहायता करना, कम से कम

एक बालक का पूरा खर्च आपको उठाना चाहिए। **आपने एक बालक को मारा है तो एक बालक को जिन्दगी दो।**

(2) संभव हो तो खानदानी जानकर एक बालक को गोद लेकर बड़ा करो। वैसे ही एक को जीवनदान + जैन धर्म का दान दो, जैनशासन को इस तरह से एक बालक की भेंट दो।

(3) "साइलेन्स स्क्री" नाम की 25 मिनिट की मूवी देखों।

(4) इस मूवी + इस पुस्तक का चारों तरफ जोरदार प्रचार कीजिये।

(5) शक्ति के अनुसार इस को छपवाकर या 500-500 कॉपी खरीद के घर-घर प्रसार कीजिए।

पहले जैनों में फिर अजैनों में.... एक भी सन्तान आपकी इस मेहनत की वजह से-गर्भपात से बच जायेगा.... तो उसका पुण्य आपको मिलेगा। ये आपका सच्चा प्रायश्चित समझो।

आप अपने व्यापार के लिए अपनी चीजों की कितनी अच्छी मार्केटिंग करते हो ना? उतनी ही मेहनत इस मूवी+इस पुस्तक के लिए करो। अभी तक सिर्फ 10 लाख लोगो ने ये मुवी देखी हैं। अभी आप सब के प्रयत्न से सिर्फ 1 वर्ष में ये संख्या 10 करोड़ तक पहुँचनी चाहिए। मुझे दृढ़ विश्वास है कि ये मूवी देखने के बाद 90 प्रतिशत लोग पूरी जिन्दगी के लिए गर्भपात नहीं करवाने की नियम ले लेंगे।

(6) लड़के-लड़कीयाँ 15-16 वर्ष की उम्र के हो जाये, उसके बाद उन्हें ये मूवी बताओ। वास्तविकता समजाकर दृढ़ प्रतिज्ञा करवाओं कि वो अपनी जिन्दगी में यह पाप नहीं करेंगे।

(7) स्कुल-कॉलेज में लड़कीयों को ये पुरी मूवी दिखाओं और इसकी गम्भीरता समजाकर तब ही उन्हें प्रतिज्ञा दिलाओ।

(8) आपकी मनपसन्द और रोज सामने आती कोई भी एक चीज का त्याग करो।

रसगुल्ला मनपसन्द हो तो भी वो वर्ष में 5-10 बार ही नजर के सामने आता है, इसलिए उसकी बाधा लेने मे विशेष त्याग नहीं होता, ये पाप बार-बार याद नहीं आयेगा।

इसलिए बार-बार पश्चाताप भी नहीं जगेगा।

लेकिन चाय-भात आदि छोड़े तो ये तो बार-बार सामने आने से उनका त्याग करोगे तो बार-बार एहसास आयेगा कि, 'मैंने गर्भपात

का पाप किया है और इसके प्रायश्चित के रूप में ये चीज छोड़ी है, मुझे वापरनी नहीं है....'

दोपहर को कोई भी एक ही सब्जी खानी। पहली रोटी लुखी खानी, सुबह एक खाखरा लूखा खाना, पापड़-खिचिया बंद..... ऐसी कोई भी बाधा ले सकते हैं।

बस,

जिन्होंने गर्भपात करवा लिया है वो इतना ध्यान रखे ऐसी एक मात्र भावना....

यदीय सम्यक्त्वबलात् प्रतीमो, भवादृशानां परमस्वभावम्।
कुवासनापाशविनाशनाय, नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय।।

तिथि : ज्येष्ठ सुदः अग्यारस वि. सं. 2073,
ता. 5-6-2017, अरिहंत शिवशक्ति अेपार्टमेन्ट।

Suction and Curettage Abortion of a 9 Week Old Fetus

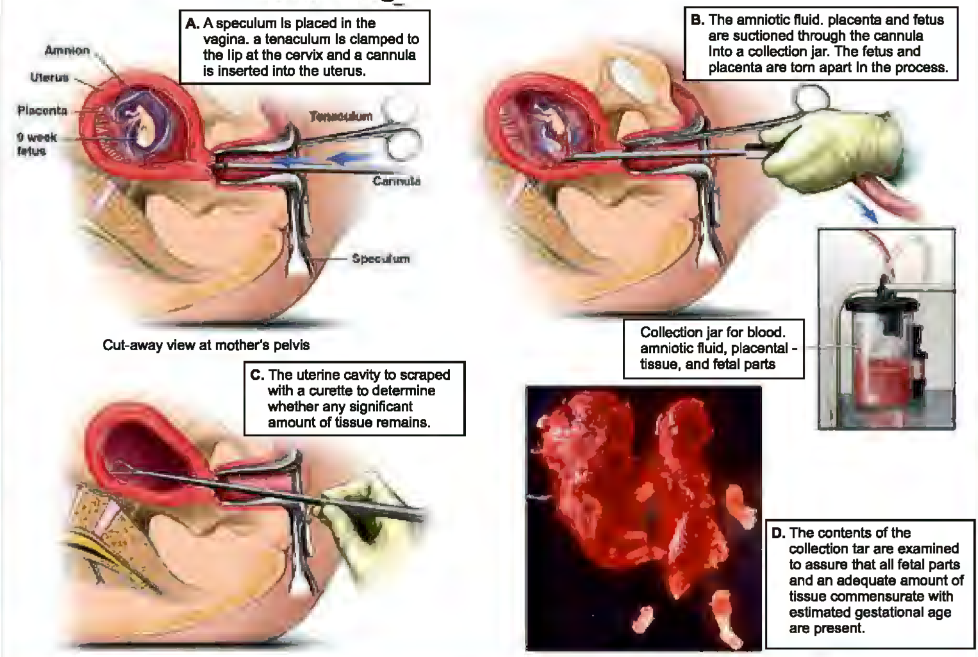

Dilation and Evacuation Abortion (D&E) of a 23 Week Old Fetus

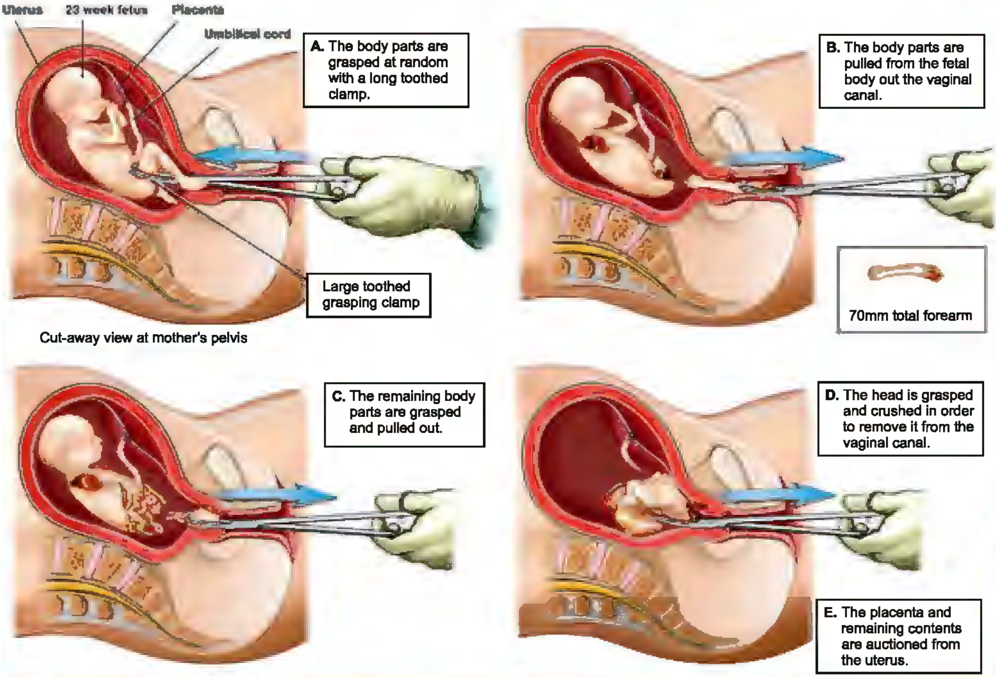

ABORTION IS MURDER

Abortion is
a Savage Act
of Violence

Not human - just a fetus.
How long until we
justify killing the old,
the sick, any person
without a champion?
It is wrong to murder humans
regardless of what they look like.

A Ten Minute Procedure You Have
The Rest Of Your Life To Regret.

सौजन्य

जिस समय हमने गर्भपात करवाया, उस समय हम
घातकी, कसाई, हत्यारे, खूनी, दुर्जन थे ।

आज सद्गुरु का संपर्क पा कर हम को भान हुआ है कि हमने गंभीर भूल की थी ।

बेटे !

तुझे वापस जिंदा करने की ताकत तो हमारे पास नहि है, लेकिन तेरे जैसे हजारों संतान भविष्य में गर्भ में ही कटकर मर न जाए, इसलिए हमारी यह पाप की संपत्ति इस पुस्तक के प्रकाशन रुपी पुण्यमार्ग में खर्च करने जितनी छोटी सी सज्जनता दिखा रहे है ।

बेटा !

तुं जहा पर भी हो, तेरे यह अपराधी माँ-बाप को माफ कर देना ।

लि.
नाम देने के लिए नालायक
तेरे दुर्जन मम्मी-पप्पा

बहन! ...महावीर, कृष्ण, राम, महादेव की मम्मी बनना हो...

हेमचंद्रसूरि, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद की मम्मी बनना हो..

कुमारपाल, संप्रति की मम्मी बनना हो..

महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोझ, भगतसिंह की मम्मी बनना हो...तो

एक प्रतिज्ञा ले लेना-

मैं गर्भपात करूंगी नहीं...किसी को प्रेरणा दूंगी नहीं...

और ऐसी सलाह मांगने वाले को कठोरता व दृढ़ता से मना करूंगी..